वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 145
ISBN 978-93-80353-43-2

श्रुतस्कंध विधान

(श्रुतज्ञानव्रत एवं जाप्य)

–: रचयित्री :–

जम्बूद्वीप रचना की पावन प्रेरिका

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
"प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष" के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404, फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

COURTESY—JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

चतुर्थ संस्करण	वीर नि. सं. 2538, चैत्र शु. त्रयोदशी	मूल्य
2200 प्रतियाँ	5 अप्रैल 2012, महावीर जयंती	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण से द्वितीय संस्करण-2007 तक 3300 प्रतियाँ
तृतीय संस्करण-2010, 1100 प्रतियाँ प्रकाशित

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश
रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

जैनधर्म में मुख्यरूप से तीन रत्न माने गये हैं-देव, शास्त्र और गुरु। इन तीन रत्नों की उपासना करने से तीन ही रत्नों की प्राप्ति होती है-सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र अर्थात् सच्चे देव-तीर्थंकर आदि भगवन्तों की पूजा-आराधना सम्यग्दर्शन को प्रदान करती है, जिनेन्द्रदेव के द्वारा कहे गए शास्त्रों का स्वाध्याय करने से सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति होती है तथा गुरुओं की भक्ति आदि करने से चारित्र सम्यक्चारित्र बन जाता है। ये तीनों ही रत्न क्रम-परम्परा से मोक्षसुख को भी प्राप्त करा देते हैं।

ज्ञान के महत्व के बारे में बताते हुए आचार्यों ने कहा है–

''ज्ञान समान न आन, जगत में सुख को कारण।
इह परमामृत जन्म-जरा-मृतु रोग निवारण।।''

इन दो पंक्तियों में कितना सार भर दिया गया है कि इस संसार में ज्ञान के समान अन्य कुछ भी सुख का कारण नहीं है और यह ज्ञानरूपी परमामृत जन्म-जरा-मृत्यु को निवारण करने वाला है।

अब कोई यह पूछे कि वो कैसे? तो उसका समाधान यह है कि जिस व्यक्ति के रोम-रोम में ज्ञान समाया हुआ है, उसे हर समय यही चिन्ता रहती है कि मैं कैसे इस जन्म-जरा-मृत्यु को समाप्त करूँ और इस चिन्ता को चिन्तन में बदलकर वह व्यक्ति अपने ज्ञान के बल पर सत्कार्यों को करता हुआ एक दिन इन तीनों का नाश करके परमात्म पद को प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार ज्ञान की इतनी महिमा जानकर सतत ज्ञानार्जन में अपना उपयोग लगाना चाहिए। कभी भी आप यह नहीं सोचें कि अब इतनी उम्र में क्या पढ़ना अथवा इतना पढ़ लिया है अब और पढ़ने की क्या जरूरत है क्योंकि ज्ञान हासिल करने की कोई उम्र नहीं होती है तथा हमेशा पढ़ते रहने से नई-नई बातों की जानकारी मिलती है अतः अपने ज्ञान को और भी अधिक वृद्धिंगत करने की इच्छा से समय-समय पर इस ''श्रुतस्कंध विधान'' को करें तथा पुस्तक में प्रकाशित सभी स्तोत्र पाठ आदि का पारायण करें, यही मंगल प्रेरणा है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

अनादिकाल से भूले-भटके हुए प्राणियों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए, उनकी धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न करने के लिए और पर के साथ-साथ स्वकल्याण के लिए भी आचार्यों ने बड़े-बड़े ग्रंथों की रचना की है।

इसी श्रृँखला में बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालसती आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी ने एक नहीं, 200 से भी अधिक ग्रंथ अपनी प्रासुक लेखनी से लिखे हैं। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला का यह पुष्प आपके हाथों में है, आप इसे भी पढ़कर, विधान करके इसकी सुगंध को, आनंद को लेकर अपने पुण्य को बढ़ाइए।

इस श्रुतस्कंध विधान में द्वादशांग-जिनवाणी-सरस्वती की पूजा है। तीर्थंकर के मुख से निकली हुई दिव्यध्वनि को ग्रहणकर गणधर द्वादशांगी ग्रंथ की रचना करते हैं। आज के शास्त्र पहले के ग्रंथों के ही अंश हैं अतः ज्ञानामृत का पान करने के लिए जिनवाणी की सदा उपासना करना चाहिए।

इससे मोहरूपी अंधकार नष्ट होकर ज्ञान की ज्योति प्रस्फुटित होती है। माताजी ने लिखा भी है–

द्वादशांग जैनवाणी, पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो, उदीतज्ञान ज्योति हो।।

द्वादशांग जिनवाणी की पूजा के बाद द्वादशांगों के अर्घ्य हैं। ये सभी जिनेन्द्रदेव के मुखकमल से निकले हुए हैं, इनके नाम हैं–

1. आचारांग 2. सूत्रकृतांग 3. स्थानांग 4. समवायांग 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति 6. धर्मकथांग 7. उपासकाध्ययनांग 8. अन्तकृतदशांग 9. अनुत्तरौपपादिकदशांग 10. प्रश्नव्याकरणांग 11. विपाकसूत्रांग 12. दृष्टिवादांग।

दृष्टिवाद के 5 भेद हैं–परिकर्म, सूत्र, पूर्वगत, प्रथमानुयोग, चूलिका।

पुनः परिकर्म के 5 भेद हैं–शशिप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति, द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, व्याख्याप्रज्ञप्ति।

दृष्टिवाद के तृतीय भेद पूर्वगत के 14 भेद हैं–1. उत्पादपूर्व 2. अग्रायणीयपूर्व 3. वीर्यानुप्रवादपूर्व 4. अस्तिनास्तिप्रवादपूर्व 5. ज्ञानप्रवादपूर्व 6. सत्यप्रवादपूर्व 7. आत्मप्रवादपूर्व 8. कर्मप्रवादपूर्व 9. प्रत्याख्यानप्रवादपूर्व 10.विद्यानुप्रवादपूर्व 11. कल्याणप्रवादपूर्व 12. प्राणावायप्रवादपूर्व 13. क्रियाविशालपूर्व 14. लोकबिंदुसारपूर्व।

दृष्टिवाद के पाँचवे भेद चूलिका के भी 5 भेद हैं– जलगताचूलिका, स्थलगताचूलिका, मायागताचूलिका, रूपगताचूलिका, आकाशगताचूलिका।

श्रुतज्ञान के 2 भेद हैं–अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य। अंगप्रविष्ट के भेद पहले बताए हैं अब अंगबाह्य के 14 भेद कौन से हैं? बताते हैं–

1. सामायिकप्रकीर्णक 2. स्तवप्रकीर्णक 3. वंदनाप्रकीर्णक 4. प्रतिक्रमणप्रकीर्णक 5. वैनयिकप्रकीर्णक 6. कृतिक्रमप्रकीर्णक 7. दशवैकालिकप्रकीर्णक 8. उत्तराध्ययन-प्रकीर्णक 9. कल्प्यव्यवहारप्रकीर्णक 10. कल्प्याकल्प्यप्रकीर्णक 11. महाकल्प्यप्रकीर्णक 12. पुंडरीकप्रकीर्णक 13. महापुण्डरीकप्रकीर्णक 14. निषिद्धिकाप्रकीर्णक।

इतने भेदों के अर्घ्य चढ़ाकर सर्व वाङ्मय में कहे चार अनुयोगों के अर्घ्य हैं–प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग।

इसके बाद कतिपय ग्रंथों के भी अर्घ्य बने हैं–

1. जयधवला टीका समेत कषाय प्राभृत 2. धवला टीका समेत षट्खण्डागम 3. महाधवला समेत महाबंध 4. त्रिलोकप्रज्ञप्ति ग्रंथ 5. जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिग्रंथ 6. पंचास्तिकाय, प्रवचनसार, समयसार, नियमसार, चतुरशीतिप्राभृत 7. मूलाचार, आचारसार, रत्नकरण्डश्रावकाचारादि 8. महापुराण, उत्तरपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण आदि 9. तत्त्वार्थसूत्रग्रंथ तट्टीका-सर्वार्थसिद्धि, तत्त्वार्थराजवार्तिक, श्लोकवार्तिक, गंधहस्तिमहाभाष्य, आप्तमीमांसा, अष्टसहस्री आदि। गोम्मटसार जीवकांड, कर्मकांड, त्रिलोकसार, लब्धिसार, क्षपणासार, पंचसंग्रहादि। पूर्णार्घ्य समस्त जिनशास्त्रों का है।

इस प्रकार पूज्य माताजी ने इस श्रुतस्कंधरूप कल्पतरु की पूजा में कुछ भी बाकी नहीं छोड़ा है। सभी के अर्घ्य दिए हैं।

18 महाभाषा और 700 लघु भाषाएं हैं, फिर भी संख्यातों भाषा में भगवान की दिव्यध्वनि को सभी समझ जाते हैं। ढ़ाई द्वीप में कर्मभूमि में 170 जिन होते हैं और इन सभी की दिव्यध्वनि से जीव अपना अघमल धो डालते हैं। इस विधान की जयमाला के अंत में माताजी ने सरस्वती के 16 नाम दिए हैं–

है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान जगन्माता कहते, ब्राह्मिणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।10।।

सभी कार्यों की सिद्धि के लिए यह विधान कल्पद्रुम के समान है। माताजी ने सुन्दर-सुन्दर छंदों में सरल शब्दों में सभी शब्दों को गूंथा है। साक्षात् सरस्वती की भंडार माताजी की कृतियों को ही देखकर अनुमान लगा सकते हैं कि इस पंचमकाल में ऐसे विरले जीव कितने हैं। पूज्य माताजी सतत ज्ञानाराधना में लगी रहें और हम सभी को ज्ञानामृत से आप्लावित करती रहें।

इसमें श्रुतज्ञान व्रतों की जाप्य, व्रतविधि, श्रुतावतार आदि विषय भी संकलित हैं।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती 108 श्री शांतिसागर जी महाराज

स्वस्ति श्री मूलसंघ में कुंदकुंदाम्नाय, सरस्वती गच्छ, बलात्कार गण में बीसवीं शताब्दी में प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य-चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है–

जन्म	–	आषाढ़ बदी 6, सन् 1872
निवास स्थान	–	भोजग्राम (जिला-बेलगाँव) कर्नाटक
नाम	–	सातगौंडा पाटिल
माता-पिता	–	माता-सत्यवती, पिता-भीमगौंडा पाटिल
क्षुल्लक दीक्षा	–	ज्येष्ठ शु. 13, सन् 1914 ग्राम-उत्तूर (जि. कोल्हापुर) महाराष्ट्र
दीक्षा गुरु	–	मुनि 108 श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1917 गिरनार क्षेत्र, स्वयं भगवान के चरण सानिध्य में
मुनि दीक्षा	–	फाल्गुन शु. 14, सन् 1920 ग्राम-येरनाल (जिला-बेलगांव) कर्नाटक
दीक्षा गुरु	–	मुनि श्री 108 देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
आचार्य पद	–	आश्विन शु. 11, सन् 1924 ग्राम-समडोली (जिला-सांगली-महाराष्ट्र) द्वारा-चतुर्विध संघ
चारित्र चक्रवर्ती पद	–	सन् 1937 गजपंथा सिद्धक्षेत्र (महा.)
समाधिमरण	–	द्वि. भाद्रपद शु. 2, सन् 1955, कुंथलगिरि (सिद्धक्षेत्र)

आचार्य देव ने अनेक दीक्षाएँ देकर चतुर्विध संघ सहित दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सारे भारत में मंगल विहार करके दिगम्बर जैन मुनि परंपरा को पुनरुज्जीवित किया। अनेक तीर्थों पर जिनप्रतिमाएँ स्थापित करायीं, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराकर तथा विद्वानों से उनका हिन्दी अनुवाद करवाकर पुस्तकों के रूप में भी प्रकाशित करवाकर जिनवाणी को स्थायित्व प्रदान किया। ऐसे बहुत से जिनधर्म प्रभावना के कार्यों से इस भूतल पर अपने यश को चिरस्थायी कर दिया।

आपने अंत में कुंथलगिरि क्षेत्र पर सल्लेखना लेकर अपने जीवनकाल में अपना आचार्यपद अपने प्रथम शिष्य मुनि श्री वीरसागर को प्रदान किया था। पुनः उनकी परम्परा में द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर मुनिराज हुए, तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर महाराज, चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर महाराज, पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज हुए हैं पुनः आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज की सन् 1992 में समाधि होने के पश्चात् उनके पट्ट पर आचार्यश्री अभिनंदनसागर महाराज हुए हैं, जो वर्तमान पट्टाचार्य (छठे पट्टाचार्य) के रूप में चतुर्विध संघ का संचालन करते हुए जिनधर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागराचार्य के प्रथम पट्टशिष्य चारित्रशिरोमणि पूज्य आचार्यरत्न श्री वीरसागर महाराज का परिचय-एक दृष्टि में

स्वस्ति श्री मूलसंघ में कुन्दकुन्दाम्नाय, सरस्वती गच्छ, बलात्कारगण में बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज हुए हैं। उनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है–

जन्म	–आषाढ़ शु. 15, सन् 1876, वि.सं. 1933
ग्राम	–वीर गाँव (जि.-औरंगाबाद, महाराष्ट्र)
नाम	–हीरालाल
जाति एवं गोत्र	–खण्डेलवाल जाति एवं गंगवाल गोत्र
पिता	–श्री रामसुख जैन
माता	–श्रीमती भाग्यवती जैन (भागू बाई)
क्षुल्लक दीक्षा	–फाल्गुन शु. 7, सन् 1923 (वि.सं. 1980)
नाम	–श्री वीरसागर महाराज
मुनिदीक्षा	–आश्विन शु. 11, सन् 1924 (वि.सं. 1981)
ग्राम	–समडोली-महाराष्ट्र
दीक्षागुरु	–चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज
आचार्य पद घोषणा	–कुंथलगिरि में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज द्वारा प्रथम भाद्रपद शु. 7, सन् 1955 (वि.सं. 2012)
आचार्यपदारोहण	–द्वि. भाद्रपद कृ. 7, सन् 1955 (वि.सं. 2012)
स्थान	–खानिया-जयपुर (राज.)
समाधिमरण	–आश्विन कृ. अमावस्या, सन् 1957 (वि.सं. 2014)
स्थान	–खानिया-जयपुर (राज.)

विधान की रचयित्री राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वततीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा– भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लोक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली नई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, रखबावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	श्रुतस्कंध विधान	1-21
2.	ज्ञान पचीसी व्रत विधि	22
3.	श्रुतस्कंध व्रत विधि	24
4.	श्रुतज्ञान व्रत एवं मंत्र	26
5.	षट्खण्डागम ग्रंथ पूजा	33
6.	षट्खण्डागम ग्रंथ स्तुति	42
7.	षट्खण्डागम ग्रंथ आरती	43
8.	अष्टसहस्री ग्रंथ पूजा	44
9.	आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की पूजन	50
10.	सरस्वती माता की आरती	54
11.	द्वादशांग सरस्वती स्तोत्र (संस्कृत)	55
12.	द्वादशांग सरस्वती स्तोत्र (हिन्दी)	56
13.	सरस्वती स्तोत्र	57
14.	सरस्वती देवी के 108 मंत्र	59
15.	जिनवाणी स्तुति	61
16.	सरस्वती चालीसा	62
17.	सरस्वती माता की स्तुति	65
18.	भजन	66
19.	भजन	67
20.	सोलह जन्मभूमियों की नामावली	68

श्रुतस्कंध मण्डल विधान

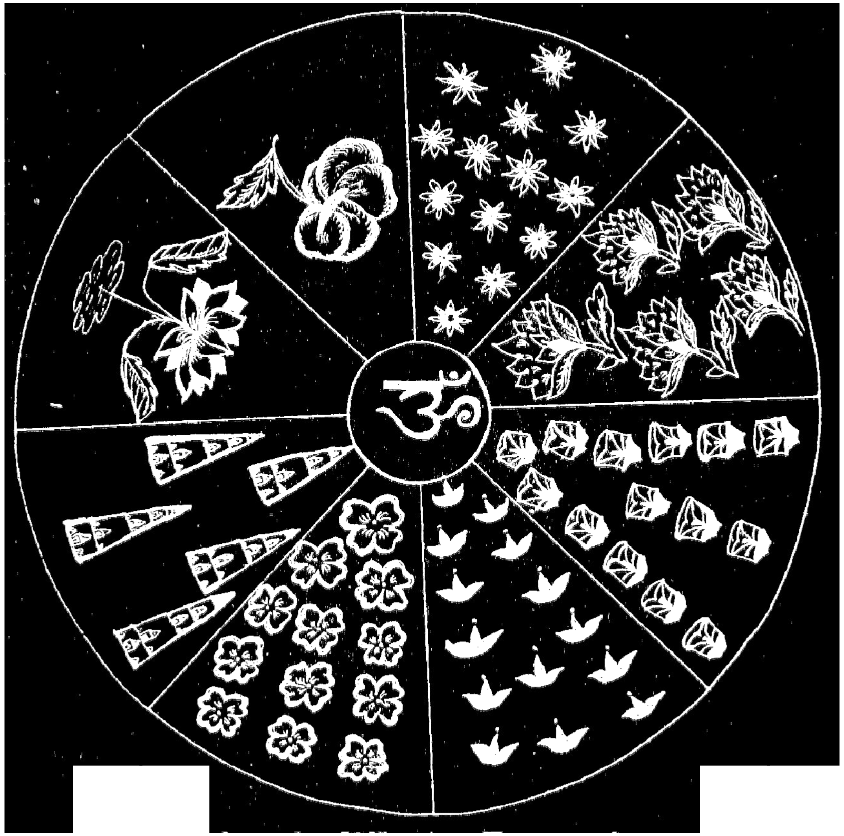

श्रुतस्कंध विधान

मंगलाचरण

–श्रुतभक्ति–

सिद्धवरसासणाणं, सिद्धाणं कम्मचक्कमुक्काणं।
काऊण णमुक्कारं, भत्तीए णमामि अंगाइं[1]।।1।।

जिनका वर शासन जग प्रसिद्ध, जो कर्मचक्र से रहित सिद्ध।
उनको कर नमस्कार भक्त्या, द्वादश अंगों को नमूँ नित्य।।1।।

आचार सूत्रकृत स्थान अंग, समवाय व व्याख्याप्रज्ञप्ती।
है ज्ञातृधर्मकथनांग छठा, औ उपासकाध्ययनांग कृती।।2।।

अंतःकृत्दश औ अनुत्तरोपपाददशक है अंगज्ञान।
है प्रश्न व्याकरण विपाकसूत्र, इन ग्यारह अंगों को प्रणाम।।3।।

परिकर्मसूत्र प्रथमानुयोग, पूर्वगत चूलिका पंचविधा।
इन युत बारहवां दृष्टिवाद, है अंग उसे प्रणमूँ त्रिविधा।।4।।

उत्पादपूर्व अग्रायणीय, औ वीर्य अस्तिनास्ति प्रवाद।
ज्ञानप्रवाद सत्यप्रवाद, आत्मप्रवाद कर्मप्रवाद।।5।।
औ प्रत्याख्यान पूर्व विद्यानुवाद कल्याण नाम पूरब।
जो प्राणवाद किरिया विशाल, औ लोकबिंदुसार पूरब।।6।।

दश चौदह आठ अठारह औ, बारह बारह सोलह व बीस।
है तीस व पंद्रह शेष चार में, दश दश वस्तू श्रुतप्रणीत।।7।।

1. प्राकृत श्रुतभक्ति (श्रीकुंदकुंददेव विरचित का पद्यानुवाद)

चौदहपूर्वों में वस्तुनाम, अधिकारों की संख्या क्रम से।
इन पूर्वों की जितनी वस्तू, उन सबको प्रणमूँ भक्ती से।।8।।
एक एक वस्तु में बीस बीस, प्राभृत माने आचार्यों ने।
वस्तू तो विषम व सम भी हैं, प्राभृत सम संख्या में माने।।9।।
चौदह पूर्वों की एक शतक, पंचानवे वस्तू होती हैं।
सब प्राभृत संख्या तीन सहस, नव सौ पूर्वों की होती हैं।।10।।

दोहा– इस विध भक्ती राग से, स्तवन करूँ श्रुत शास्त्र।
जिनवर वृषभ मुझे तुरत, देवो श्रुत का लाभ।।11।।

अथ श्रुतस्कंधयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अथ स्थापना

गीता छंद– जिनदेव के मुख से खिरी, दिव्य ध्वनी अनअक्षरी।
गणधर ग्रहण कर द्वादशांगी, ग्रंथमय रचनाकरी।।
उन अंग पूरब शास्त्र के ही, अंश ये सब शास्त्र हैं।
उस जैनवाणी को नमूँ, जो ज्ञान अमृत सार है।।

दोहा– श्रुतस्कंध वर कल्पद्रुम, मुंहमांगा फल देत।
आह्वानन कर मैं जजूँ, स्व पर ज्ञान के हेत।।1।।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुम! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

चामर छंद– जैन साधु चित्त सम पवित्र नीर ले लिया।
स्वर्ण भृंग में भरा पवित्र भाव मैं किया।।
द्वादशांग जैनवाणी पूजते उद्योत हो।
मोहध्वांत नष्ट हो उदीत ज्ञानज्योति हो।।1।।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशरादि को घिसाय स्वर्ण पात्र में भरी।
पाप ताप शांति हेतु पूजहूँ इसी घरी।। द्वादशांग....।।2।।

ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्ररश्मि के समान धौत स्वच्छ शालि हैं।
पुंज को चढ़ावते भरा सुवर्ण थाल है।। द्वादशांग....।।3।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
मोगरा गुलाब चंप केतकी चुनाय के।
स्वात्म सौख्य प्राप्त होय पुष्प को चढ़ावते।। द्वादशांग......।।4।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
लड्डुकादि व्यंजनों से थाल को भराय के।
ज्ञानदेवता समीप भक्ति से चढ़ाय के।। द्वादशांग.....।।5।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप में कपूर ज्वाल आरती उतारहूँ।
ज्ञानपूर जैन भारती हृदय में धारहूँ।।द्वादशांग.....।।6।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धूप ले दशांग अग्निपात्र में हि खेवते।
कर्म भस्म हो उड़े सुगंधि को बिखेरते।।द्वादशांग......।।7।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
सेव संतरा अनार द्राक्ष थाल में भरें।
मोक्ष फल के हेतु शास्त्र के समीप ले धरें।।द्वादशांग.......।।8।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
वारि गंध शालि पुष्प चरु सुदीप धूप ले।
सत्फलों समेत अर्घ से जजें सुयश मिले।।द्वादशांग......।।9।।
ॐ ह्रीं श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वर्ण भृंग नाल से, सुशांति धार देय के।
विश्व शांति हो तुरंत, इष्ट सौख्य देय के।।द्वादशांग.....।।10।।
शांतये शांतिधारा।।
गंध से समस्तदिक्, सुगंध कर रहे सदा।
पुष्प को समर्पिते, न दुःख-व्याधि हो कदा।।द्वादशांग....।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा– **जिनवाणी है पूज्य, अंग तथा अंगबाह्य जो।**
जिनवच जिनसम पूज्य, अतः पूजहूँ भक्ति से।।
इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

अथ प्रथमदले पुष्पांजलिः

चौपाई– **मुनियों के आचार प्रधान, उनका पूरण करे बखान।**
करो यत्नपूर्वक सब क्रिया, जिससे मिले शीघ्र शिवप्रिया।।
दोहा– **पद हैं आचारांग में, अठरह सहस प्रमाण।**
जो पूजें नित अर्घ ले, मिले सौख्य निर्वाण।।1।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गत आचारांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वसमय परसमयों को कहे, स्त्री के लक्षण वरणये।
सूत्रकृतांग दूसरा अंग, इसको नमत मिले सुख संग।।
दोहा– **इसी दूसरे अंग में, पद छत्तीस हजार।**
पूजत ही भ्रम नाश के, मिले समय का सार।।2।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसूत्रकृतांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चौपाई– **जीव और पुद्गल के भेद, एक दोय त्रय आदि अनेक।**
वर्णे स्थानांग सदैव, पूजत मिले ज्ञान स्वयमेव।।
दोहा– **तीजे स्थानांग में, पद ब्यालीस हजार।**
जो पूजें वे शीघ्र ही, लहें स्वात्मनिधि सार।।3।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतस्थानांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्रव्य अपेक्षा रहें समान, उसे कहें समवाय सुमान।
क्षेत्र काल अरु भाव समान, इनका भी यह करे बखान।।
दोहा– **एक लाख चौंसठ सहस, पद इसके हैं जान।**
पूजत ही जिनके सदृश, मिलता स्वात्म निधान।।4।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसमवायांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जीव अस्ति या नास्ती आदि, साठ हजार प्रश्न इत्यादि।
इनका उत्तर देवे नित्य, व्याख्या प्रज्ञप्ती वह सिद्ध।।

दोहा– **पद माने दो लाख अरु, अट्ठाईस हजार।**
वसुविध अर्घ चढ़ाय हूँ, मिले सुगुण भंडार।।5।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतव्याख्याप्रज्ञप्तिअंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर की धर्म कथादि, दिव्यध्वनि से वर्णे सदि।
त्रय संध्या में खिरती ध्वनी, संशय आदि दोष को हनी।।

दोहा– **पांच लाख छप्पन सहस, पद हैं इसमें जान।**
नाथ[1] धर्म-कथांग यह, जजूँ इसे गुणखान।।6।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतनाथधर्मकथांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाक्षिक नैष्ठिक साधक भेद, श्रावक के प्रतिमादि अनेक।
इनका वर्णन करे अमंद, सो उपासकाध्ययन सुअंग।।

दोहा– **ग्यारह लख सत्तर सहस, पद हैं इसमें सिद्ध।**
जो पूजें नित भाव से, वे पद लहें अनिंद्य।।7।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतउपासकाध्ययनांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति तीर्थंकर तीरथकाल, दश दश मुनि निज आत्म संभाल।
घोर घोर उपसर्ग सहंत, केवलि हो निर्वाण लहंत।।

दोहा– **अन्तःकृत दश नाम यह, अंग जजूँ धर नेह।**
तेइस लख अठवीस सहस, पद से यह वर्णेय।।8।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंतःकृतदशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर का तीर्थ, उनमें हो दश दश मुनि ईश।
घोरोपसर्ग सहनकर मरे, अनुत्तर में इन्द्र अवतरे।।

दोहा– **अनुत्तरौपपादिक दशं, अंग जजूँ सुखकार।**
पद हैं बानवे लाख अरु, चव्वालीस हजार।।9।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गत अनुत्तरौपपादिकदशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आक्षेपिणि विक्षेपिणि तथा, संवेदनि निर्वेदनि कथा।
नष्ट मुष्टि चिंतादिक प्रश्न, वर्णन करता है यह अंग।।

1. ज्ञातृधर्मकथांग नाम भी है।

दोहा– **इसमें पद तिरानवे, लाख व सोल हजार।**
प्रश्न व्याकरण अंग को, जजूँ मिले सुखकार।।10।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्रश्नव्याकरणांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अरु अशुभ कर्मफल पाक, वर्णन करता अंग विपाक।
द्रव्य क्षेत्र काल अरु भाव, इनके आश्रय कहे स्वभाव।।

दोहा– **इस विपाक सूत्रांग में, पद हैं एक करोड़।**
लाख चुरासी भी कहें, जजूँ सदा कर जोड़।।11।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतविपाकसूत्रांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन शतक त्रेसठ मत भिन्न, उनका वर्णन करे अखिन्न।
नाना भेद सहित यह अंग, दृष्टिवाद नाम यह अंत।।

दोहा– **इक सौ आठ करोड़ अरु, पद हैं अड़सठ लाख।**
छप्पन हजार पाँच भी, जजूँ नमाकर माथ।।12।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ द्वितीयदले पुष्पांजलिः

शंभु छंद– **इस दृष्टिवाद के पाँच भेद, परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग।**
पूरबगत अरु चूलिका कही, इनमें भी कहे प्रभेद योग।।
पहले परिकर्म के पांच भेद, उनमें शशि प्रज्ञप्ती पहला।
उसमें पद छत्तिस लाख पांच, हज्जार जजूँ ले अर्घ भला।।13।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतचन्द्रप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा सूरज प्रज्ञप्ति कहा, परिकर्म सूर्य से संबंधी।
आयू मंडल परिवार ऋद्धि, अरु गमन अयन दिन-रात विधी।।
इन सबका वर्णन करता यह, इसको भक्ती से पूजूँ मैं।
पद पांच लाख अरु तीन सहस, इन वंदत भव से छूटूँ मैं।।14।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसूर्यप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञप्ती जंबूद्वीप नाम, यह मेरु कुलाचल क्षेत्रादिक।
वेदिका सरोवर नदी भोग, भू जिनमंदिर सुरभवनादिक।।

इस जंबूद्वीप के मध्य विविध, रचना का वर्णन करता है।
पद तीन लाख पच्चीस सहस, इनका अर्चन भव हरता है।।15।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतजंबूद्वीपप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मध्यलोक में द्वीप और, सागर हैं संख्यातीत कहे।
किसमें क्या है? यह सब वर्णे, व्यंतर आदिक आवास कहे।।
इसमें पद बावन लाख तथा, छत्तीस हजार बखाने हैं।
हम भक्ती से पूजें इसको, जिससे भव भव दुःख हाने हैं।।16।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतद्वीपसागरप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याख्या प्रज्ञप्ती परीकर्म, जीवाजीवादिक द्रव्यों को।
भव्यों व अभव्यों सिद्धों को, वर्णे बहु वस्तू भेदों को।।
इसमें पद लाख चुरासी अरु, छत्तीस हजार बखाने हैं।
हम इसकी पूजा करके ही, निज आत्मा को पहचाने हैं।।17।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतव्याख्याप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ तृतीयदले पुष्पांजलिः

उस दृष्टिवाद का भेद दूसरा, सूत्र नाम का माना है।
है जीव अबंधक अवलेपक, इत्यादिक करे बखाना है।।
यह क्रिया-अक्रियावादों को, अरु विविध गणित को वर्णे है।
पद हैं अट्ठासी लाख कहे, इसको पूजूँ भवतरणी ये।।18।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादभेदसूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चतुर्थदले पुष्पांजलिः

तीर्थंकर चक्री हलधर अरु, नारायण प्रतिनारायण हैं।
त्रेसठ ये शलाकापुरुष कहे, इनके चरित्र को वर्णे ये।।
जिनवर विद्याधर ऋद्धीधर, मुनियों राजादिक पुरुषों को।
वर्णे पद इसमें पाँच सहस, प्रथमानुयोग पूजूँ इसको।।19।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादभेदप्रथमानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचमदले पुष्पांजलिः

चौथा है भेद पूर्वगत जो, इसके भी चौदह भेद कहे।
उत्पाद पूर्व पहला यह भी, उत्पत्ति नाश स्थिति कहे।।
सब द्रव्यों की पर्यायों को, यह वर्णे इसको पूजूँ मैं।
इसमें पद एक करोड़ कहे, वंदत भव दुःख से छूटूँ मैं।।20।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतउत्पादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय पूरब दूजा, यह सुनय सात सौ अरु दुर्नय।
छह द्रव्य पदार्थों को वर्णे, इसमें पद छ्यानवे लाख अभय।।
इस द्वितिय पूर्व को पूजूँ मैं, इसका कुछ अंश आज भी है।
षट्खण्डागम जो सूत्रग्रंथ, उन भक्ती भवभय हरती है।।21।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअग्रायणीयपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानुवाद है तृतिय पूर्व, यह आत्मवीर्य परवीर्यों को।
तपवीर्यादिक को कहता है, पद सत्तर लाख इसी में हों।।
इसकी भक्ती से शक्ति बढ़े, फिर युक्ति मिले शिवमारग की।
फिर ज्ञान पूर्ण हो मुक्ति मिले, मैं पूजा करूँ सतत इसकी।।22।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतवीर्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व, स्वद्रव्य क्षेत्र कालादिक से।
सब वस्तू का अस्तित्व कहे, नास्तित्व अन्यद्रव्यादिक से।।
यह दुर्नय का खंडन करके, नय द्वारा विधि प्रतिषेध कहे।
इसमें पद साठ लाख मानें, इसको पूजत सम्यक्त्व लहे।।23।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञानप्रवाद नाम पूरब, प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणों का।
मतिश्रुत अवधी मनपर्यय अरु, केवल इन पांचों ज्ञानों का।।
बहुभेद प्रभेद सहित वर्णे, इसको पूजत हो ज्ञान पूर्ण।
इसमें पद इक कम एककोटि, इस वंदत हो अज्ञान चूर्ण।।24।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतज्ञानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सत्य प्रवाद पूर्व दशविध, सत्यों का वर्णन करता है।
यह सप्तभंग से सब पदार्थ का, सुन्दर चित्रण करता है।।
इसके पूजन से झूठ कपट, दुर्भाषायें नश जाती हैं।
पद एककोटि छह हैं पूजूँ, दिव्यध्वनि वश हो जाती हैं।।25।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतसत्यप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा निश्चय से शुद्ध कहा, फिर भी अशुद्ध संसारी है।
व्यवहार नयाश्रित ही कर्मों का, कर्ता है भवकारी है।।
यह आत्मप्रवाद पूर्व कहता, इसमें पद छब्बिस कोटि कहे।
इसको पूजत ही आत्मनिधी, मिलती है जो भव दुःख दहे।।26।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतआत्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कर्मप्रवाद पूर्व नाना, विध कर्मों का वर्णन करता।
ईर्यापथ कर्म कृतीकर्मों को, अधःकर्म को भी कहता।।
इसमें पद एक करोड़ लाख, अस्सी हैं इसको पूजूँ मैं।
निज पर का भेद ज्ञान करके, इन आठ करम से छूटूँ मैं।।27।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतकर्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, वह द्रव्य क्षेत्र कालादिक से।
नियमित व अनियमित कालों तक, बहुत्याग विधी को बतलाके।।
वस्तू सदोष का त्याग करो, निर्दोष वस्तु भी तप रुचि से।
पद हैं चौरासी लाख कहें, पूजूँ इसको मैं बहु रुचि से।।28।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विद्यानुप्रवाद रोहिणी, आदिक महविद्या पांच शतक।
अंगुष्ठ प्रसेनादिक विद्या, मानी हैं लघु ये सात शतक।।
इनके सब साधन विधी आदि को, वर्णे इसको जजूँ यहाँ।
पद एककोटि दश लाख कहे, इस पढ़ च्युत हों कुछ साधु यहाँ।।29।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतविद्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणप्रवाद पूर्व वर्णे, शशि सूर्य ग्रहादिक गमन क्षेत्र।
अष्टांगमहान निमित्तादिक, पद इसमें छब्बिस कोटि मात्र।।

तीर्थंकर के कल्याणक को, चक्री आदिक के वैभव को।
यह कहता इसको पूजें हम, इससे कल्याण हमारा हो।।30।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतकल्याणप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह प्राणावाय प्रवाद पूर्व, इंद्रिय बल आयु उच्छवासों का।
अपघात मरण अरु आयुबंध, आयू अपकर्षण आदी का।।
यह आयुर्वेद के अष्ट अंग, का विस्तृत वर्णन है करता।
इसमें पद तेरह कोटि इसे, पूजत ही स्वास्थ्य लाभ मिलता।।31।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्राणावायप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नृत्यशास्त्र संगीतशास्त्र, व्याकरण छंद अरु अलंकार।
पुरुषादी के लक्षण कहता, जिसमें नवकोटी पद विचार।।
सो है किरिया विशाल पूरब, इसको जो रुचि से भजते हैं।
वे सब शास्त्रों में हों प्रवीण, फिर स्वपर भेद को लभते हैं।।32।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतक्रियाविशालपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिकर्म और व्यवहार रज्जु-राशी गुणकार वर्ग घन को।
बहु बीजगणित को भी वर्णे, कहता है मुक्ती स्वरूप को।।
पद बारह कोटि पचास लाख, इसको पूजूँ ले अर्घ भले।
यह लोकविंदुसार पूरब, इसके वंदत लोकाग्र मिले।।33।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतलोकविंदुसारपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ षष्ठदले पुष्पांजलिः

दृष्टिवाद का भेद चूलिका, पांच भेद भी उसके हैं।
जलगता प्रथम जल में स्थलवत्, चलना इत्यादिक वर्णे हैं।।
जलस्तंभन के मंत्र तंत्र तप, आदि अग्नि भक्षण आदिक।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, सहस द्विशत पूजूँ नितप्रति।।34।।
ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतजलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्थलगता चूलिका है, मेरू कुलपर्वत क्षेत्रों को।
उन पर गमनादिक मंत्र तंत्र, तप आदिक बहुविधि कहती वो।।

पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ इसमें हैं।
इसको पूजूँ मैं अर्घ लिये, यह साधन भवदधि तरने में।।35।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतस्थलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मायागता चूलिका वह, माया का खेल सिखाती है।
बहु इन्द्रजाल क्रीड़ाओं की, मंत्रादि विधी बतलाती है।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ इसमें हैं।
मैं जजूँ इसे यह कुशल सदा, सब जग की माया हरने में।।36।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतमायागताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह रूपगता चूलिका सिंह, गज घोड़ा मनुजादिक बहुविध।
रूपों को धरने के मंत्रों, तप आदिक को वर्णे नितप्रति।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ माने हैं।
मैं जजूँ मिले मुझ आत्मरूप, मुझको पररूप हटाने हैं।।37।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतरूपगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाशगता चूलिका सदा, नभ में गमनादि सिखाती है।
बहु विध के मंत्र तंत्र तपके, साधन की विधी बताती है।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ है वर्णे।
मैं इस आशा से जजूँ मिले, मुझ लोकाकाश अग्रक्षण में।।38।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतआकाशगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ सप्तमदले पुष्पांजलिः

दोहा— **अंगबाह्य के भेद हैं, चौदह शास्त्र प्रसिद्ध।**
नाम प्रकीर्णक से यही, सामायिक आदीक।।

रोला छंद— **नियत काल सामायिक, त्रय संध्या में करना।**
अनियत काल सदैव, रागद्वेष परिहरना।।
समताभावस्वरूप, सामायिक कहता है।
प्रथम प्रकीर्णकरूप, जजें मोक्ष मिलता है।।39।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य सामायिकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों तीर्थेश, इनकी स्तुति वंदन का।
उसका फल वर्णेय, वही प्रकीर्णक दूजा।।
जिन प्रतिमा जिनयज्ञ, बहुविधान यह वर्णे।
मैं पूजूँ बहु भक्ति, जिनवर की ले शरणे।।40।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य चतुर्विंशतिस्तव-प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर या जिनगेह, एक एक का वंदन।
सिद्ध वंदना येह, करता पाप निकंदन।।
वंदन विधि फल आदि, सबका वर्णन करता।
पूजूँ मन-वच-काय, महापुण्य यह भरता।।41।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य वंदनाप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिवस रात्रि अरु पक्ष, चातुर्मास संवत्सर।
ईर्यापथ उत्तमार्थ, इन सबका आश्रय कर।।
प्रतिक्रमण के सात, भेदों का बहु वर्णन।
प्रतिक्रमण यह नाम, पूजूँ शुचिकर तन मन।।42।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य प्रतिक्रमणप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र, तप उपचार विनय हैं।
इनके लक्षण भेद, फल आदिक वर्णन है।।
नाम वैनयिक येह, पंचम भेद कहाता।
पूजूँ भक्ति समेत, मिले सर्व सुख साता।।43।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य वैनयिकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो स्वाधीन करेय, प्रदक्षिणा त्रय अवनति।
त्रय उपवेशन और, भक्त्या चार शिरोनति।।

द्वादश हों आवर्त, बहु कृतिकर्म विधी से।
जिन सिद्धादि नमेय, जजूँ इसे बहुरुचि से।।44।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य कृतिकर्मप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवैकालिक ग्रंथ, मुनि के आचारों को।
भिक्षाटन विधि आदि, चर्या उसके फल को।।
वर्णे बहुत विशेष, उसे जजूँ मन वच तन।
जिन सूत्रों की भक्ति, करे ज्ञान का वर्धन।।45।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य दशवैकालिक-प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार तरह उपसर्ग, बाइस परिषह आदिक।
इनका सहन विधान, फल शिव या स्वर्गादिक।।
इन सबको वर्णेय, उत्तराध्ययन वही है।
पूजूँ धर मन नेह, मिलती सौख्य मही है।।46।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य उत्तराध्ययन-प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषियों को यदि दोष, लगे व्रतादिक में जो।
प्रायश्चित विधान, बहुविध से वर्णे जो।।
कहा कल्प्यव्यवहार, सूत्र प्रकीर्णक नामा।
पूजूँ रुचि मन धार, मिले शीघ्र शिवरामा।।47।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य कल्प्यव्यवहार-प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधू के यह योग्य, यह अयोग्य इस विध से।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव निमित्त इन धर के।।
कल्प्याकल्प्य सुनाम, इन सबको कहता है।
पूजूँ करूँ प्रणाम, मन पावन करता है।।48।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य कल्प्याकल्प्य-प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा शिक्षा संघ, पोषण निजसंस्कारा।
सल्लेखन उतमार्थ, मुनि के छहों प्रकारा।।
द्रव्यादी के निमित्त, इन सबको वर्णे जो।
महाकल्प्य वह सूत्र, जजूँ भक्ति धर उसको।।49।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य महाकल्प्यप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध देव व इंद्र, सामानिक इत्यादी।
इनके सुख विभवादि, इनके कारण आदी।।
पूजा दान तपादि, इन सबको कहता जो।
पुंडरीक है नाम, जजूँ नमाकर शिर को।।50।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य पुंडरीकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव देवियों आदि, के उपपाद इत्यादी।
तप शीलादि निमित्त, कहें सदा सुख आदी।।
महापुंडरीकास्य, वर्णन करे निरन्तर।
पूजूँ भक्ति संभाल, मिले शीघ्र शिवसुन्दर।।51।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य महापुंडरीकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिगण के बहुभेद, युत प्रायश्चित वर्णे।
निषिद्धिका है नाम, मुनिचर्या को वर्णे।।
चौदहवाँ अंगबाह्य, भेद प्रकीर्णक माना।
पूजूँ भक्ति बढ़ाय, मिले शीघ्र निजधामा।।52।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतअंगबाह्यस्य निषिद्धिकाप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (शंभु छंद) –

यह द्वादश अंग व अंगबाह्य, इन रूप दिव्यध्वनि जिनवर की।
हैं जितने जैनशास्त्र अब भी, सब साररूप ध्वनि जिनवर की।।

गंगा का जल घट में भर लें, वैसे हि ग्रन्थ जिनवर वाणी।
मैं पूजूँ पूरण अर्घ लिये, इस युग में यह ही कल्याणी।।53।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतद्वादशांगअंगबाह्यस्य सर्वश्रुतज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ अष्टमदले पुष्पांजलिः

दोहा– **सर्ववाङ्मय में कहे, चार अनुयोग प्रसिद्ध।**
प्रथम करण अरु चरण अरु, द्रव्य नाम से सिद्ध।।

शुंभ छन्द – **जो धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष, पुरुषार्थ कहे अरु चरित कहे।**
त्रेसठ शलाका पुरुषों के, आदर्श महान पुराण कहे।।
वह पुण्य रूप है रत्नत्रयमय, बोधि समाधि निधान महा।
मैं पूजूँ उसको उसही का, प्रथमानुयोग यह नाम कहा।।54।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतप्रथमानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोक अलोक विभाग कहे, षट्काल परावर्तन कहता।
चारों गति के संसरण कहें, भव पंच परावर्तन कहता।।
दर्पण समान वह त्रिभुवन का, सब चित्त सामने झलकाता।
मैं जजूँ उसे करणानुयोग यह, नाम धरे भवि सुखदाता।।55।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतकरणानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक मुनि के आचाररूप, चारित्र सही जो बतलाता।
उसकी उत्पत्ती वृद्धी औ, रक्षा के साधन सिखलाता।।
चरणानुयोग है शास्त्र वही, जो मोक्ष महल में चढ़ने को।
चरणों को रखने हेतु सहज, सोपानरूप पूजूँ इसको।।56।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतचरणानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जीव-अजीव सुतत्त्वों को, अरु पुण्य-पाप को बतलाता।
आस्रव-संवर अरु बंध-मोक्ष, तत्त्वों को विधिवत् समझाता।।
वह दीपसदृश द्रव्यानुयोग, द्रव्यों को प्रकट दिखाता है।
श्रुतविद्या का सुन्दर प्रकाश, मैं जजूँ इसे सुखदाता है।।57।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदेवमुखकमलविनिर्गतद्रव्यानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

कतिपय ग्रंथों को अर्घ्य

चाल –हे दीनबंधु......

जो है कसायपाहुड़, गुणधर गुरू रचित।
क्रोधादि कषायों को, सब विध किया ग्रथित।।
जयधवल नाम टीका, गाथा दो सौ तेंतिस।
पूजूँ मैं भक्ति करके, हो पूर्ण ज्ञान विकसित।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतजयधवलाटीकासमेतकषायप्राभृत-ग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरसेन सूरिवर से, पाया जो ज्ञान मुनि ने।
श्री पुष्पदंत मुनिवर, अरु भूतबली मुनि ने।।
षट्खंड जिनागम की, रचना रची उभय ने।
धवला प्रसिद्ध टीका, पूजूँ धरूँ विनय मैं।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतधवलाटीकासमेतषट्खण्डागमग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबंध ग्रंथ माने, टीका महाधवल युत।
उनको जजूँ रुची से, हो ज्ञानवृद्धि संतत।।
कर्मों का बंध सत्ता, उदयादि को बखाने।
इसको जजें भविकजन, वे कर्मबंध हानें।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतमहाधवलाटीकासमेतमहाबंधग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीयतिवृषभ की रचना, तीलोयपण्णती है।
इससे त्रिलोक रचना, स्पष्ट झलकती है।।
इस ग्रन्थ के पढ़े से, होता त्रिलोक दर्शन।
मैं अर्घ ले जजूँ नित, होगा निजात्म दर्शन।।61।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतत्रिलोकप्रज्ञप्तिग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बुद्वीप की पण्णत्ति, इस द्वीप को दिखाती।
मेरू कुलाचलादिक, सब वस्तु को बताती।।
इसके पठन से जम्बू-द्वीपादि को समझ लो।
भक्ती से अर्घ करके, निजलोक भी समझ लो।।62।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतजंबूद्वीपप्रज्ञप्तिग्रन्थाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचास्तिकाय, प्रवचन-सारादि समयसारा।
चौरासि पाहुड़ादी, अरु ग्रन्थ नियम सारा।।
इन सबको अर्घ लेके, पूजूँ निजात्म रुचि से।
अज्ञान भाव हटकर, निज ज्ञानज्योति चमके।।63।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतपंचास्तिकायप्रवचनसारसमयसार नियमसार चतुरशीतिप्राभृतग्रन्थेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचारसार मूला-चारादि शास्त्र मुनि के।
जो रत्नकरंडादी, श्रावक क्रियादि कहते।।
आचारशास्त्र पूजा-दानादि को बखाने।
उनको जजूँ रुची से, वे सर्वदुःख हानें।।64।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतमूलाचाराचारसाररत्नकरण्डश्रावकाचारादिशास्त्रेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो हैं पुराणआदी, बहु शास्त्र मान्य जग में।
हरिवंश पुराणादी, अरु पद्मचरित इनमें।।
तीर्थंकरों व चक्री, नारायणादिकों का।
वर्णे चरित्र सुंदर, उनको जजूँ सुनीका।।65।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतमहापुराणउत्तरपुराणहरिवंशपुराणपद्मपुराणादिग्रन्थेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्त्वार्थ सूत्र तत्त्वों, को वर्णता है सुन्दर।
गुरु गृद्धपिच्छ इसमें, भर दीना श्रुत समुंदर।।
सर्वार्थसिद्धि आदिक, टीका इसी पे बहुती।
हैं आप्तमीमांसादि, रचना जजूँ सुभक्ती।।66।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गततत्त्वार्थसूत्रग्रन्थतट्टीकासर्वार्थसिद्धितत्त्वार्थराजवार्तिकश्लोकवार्तिकगंधहस्तिमहाभाष्य-आप्तमीमांसाअष्टशती अष्टसहस्रीआदितत्संबंधितसर्वग्रन्थेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोमट्टसार जीवकांड कर्मकांड श्रुत।
त्रिलोकसार लब्धिसार, क्षपणसार श्रुत।।
ये पंच संग्रहादि, ग्रंथ अर्थ पूर्ण हैं।
इनको जजूँ इन्हीं से, अनेकांत पूर्ण हैं।।67।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतगोमट्टसारजीवकांडकर्मकांडत्रिलोकसारलब्धिसार क्षपणसारपंचसंग्रहनामग्रन्थेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद – **जितने जिनश्रुत उपलब्ध आज, जिनमंदिर मठ ग्रंथालय में।**
गुरुपरंपरा से प्राप्त लिखा, भवभीरु महाव्रति मुनिजन ने।।
सब अंग पूर्व के अंश-अंश, जिनवर की वाणी मानी है।
मैं पूजूँ अर्घ चढ़ा करके, ये स्वात्म सुधारस दानी है।।68।।

ॐ ह्रीं पूर्वाचार्यमुखकमलविनिर्गतगुरुपरंपरागतजिनमंदिरमठग्रन्थालयस्थितसर्वजिनशास्त्रेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीं वद वद वाग्वादिनि भगवति सरस्वति ह्रीं नमः।**

जयमाला

दोहा – **द्वादशांग हे वाङ्मय! श्रुतज्ञानामृतसिंधु।**
गाऊँ तुम जयमालिका, तरूँ शीघ्र भवसिंधु।।1।।

शंभु छंद – **जय जय जिनवर की दिव्यध्वनी, जो अनक्षरी ही खिरती है।**
जय जय जिनवाणी श्रोताओं को, सब भाषा में मिलती है।।
जय जय अठरह महाभाषाएँ, लघु सातशतक भाषाएँ हैं।
फिर भी संख्यातों भाषा में, सब समझें जिन महिमा ये हैं।।2।।

जिन दिव्यध्वनी को सुन करके, गणधर गूंथें द्वादश अंग में।
बारहवें अंग के पांच भेद, चौथे में चौदह पूर्व भणें।।
पद इक सौ बारह कोटि तिरासी, लाख अठावन सहस पंच।
मैं इनका वंदन करता हूँ, मेरा श्रुत में हो पूरणांक।।3।।

इक पद सोलह सौ चौंतीस कोटी और तिरासी लाख तथा।
है सात हजार आठ सौ अट्ठासी, अक्षर जिन शास्त्र कथा।।
इतने अक्षर का इक पद तब, सब अक्षर के जितने पद हैं।
उनमें से शेष बचें अक्षर वह, अंगबाह्य श्रुत नाम लहे।।4।।

जो आठ कोटि इक लाख आठ, हज्जार एक सौ पचहत्तर।
चौदह प्रकीर्णमय अंगबाह्य के, इतने ही माने अक्षर।।
यह शब्द रूप अरु ग्रंथरूप, सब द्रव्यश्रुत कहलाता है।
जो ज्ञानरूप है आत्मा में, वह कहा भावश्रुत जाता है।।5।।

जिनको केवलज्ञानी जानें, पर वच से नहिं कह सकते हैं।
ऐसे पदार्थ सु अनंतानंत, जो तीन भुवन में रहते हैं।।
उनसे भि अनन्तवें भाग प्रमित, वचनों से वर्णित हों पदार्थ।
इन प्रज्ञापनीय से भि अनन्तवें, भाग कथित श्रुत में पदार्थ।।6।।

फिर भी यह श्रुत सब द्वादशांग, सरसों सम इसका आज अंश।
उनमें से भी लवमात्र ज्ञान, हो जावे तो भी जन्म धन्य।।
यह जिन आगम की भक्ती ही, निज पर का भान कराती है।
यह भक्ती ही श्रुतज्ञान पूर्णकर, श्रुतकेवली बनाती है।।7।।

श्रुतज्ञान व केवलज्ञान उभय, ज्ञानापेक्षा हैं सदृश कहे।
श्रुतज्ञान परोक्ष लखे सब कुछ, बस केवलज्ञान प्रत्यक्ष लहे।।
अंतर इतना ही तुम जानो, इसलिए जिनागम आराधो।
स्वाध्याय मनन चिंतन करके, निजआत्म सुधारस को चाखो।।8।।

इन ढाईद्वीप में कर्मभूमि में, इक सौ सत्तर जिन होते हैं।
उन सबकी ध्वनि जिन आगम है, इससे जन अघमल धोते हैं।।

जिनवचपूजा जिनपूजा सम, यह केवलज्ञान प्रदाता है।
नित पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, यह भव्यों को सुखदाता है।।9।।

है नाम भारती सरस्वती, शारदा हंसवाहिनी तथा।
विदुषी वागीश्वरि और कुमारी, ब्रह्मचारिणी सर्वमता।।
विद्वान जगन्माता कहते, ब्राह्मणी व ब्रह्माणी वरदा।
वाणी भाषा श्रुतदेवी गौ, ये सोलह नाम सर्व सुखदा।।10।।

हे सरस्वती! अमृतझरिणी, मेरा मन निर्मल शांत करो।
स्याद्वाद सुधारस वर्षाकर, सब दाह हरो मन तृप्त करो।।
हे जिनवाणी माता मुझ, अज्ञानी की नित रक्षा करिये।
दे केवल ''ज्ञानमती'' मुझको, फिर भले उपेक्षा ही करिये।।11।।

दोहा— भूत भविष्यत् संप्रति, त्रैकालिक जिनशास्त्र।
श्रुतस्कंध है कल्पद्रुम, नमत सिद्धि सर्वार्थ।।

ॐ ह्रीं समग्र श्रुतस्कंधकल्पद्रुमाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

शेर छंद— जो भव्य श्रुतस्कंध कल्पद्रुम को यजेंगे।
वे सर्व मनोवांछित को प्राप्त करेंगे।।
श्रुतज्ञान दृक् से स्वात्मतत्त्व को विलोकेंगे।
फिर केवल ''ज्ञानमती'' दृक् से लोक लोकेंगे[1]।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

ॐ ह्रीं श्री ऋषभदेवाय सर्व सिद्धि कराय,
सर्व सौख्यं कुरु-कुरु ह्रीं नमः।।

1. देखेंगे।

प्रशस्ति

तीर्थंकर को नित नमूँ, नमूँ सरस्वति मात।
गौतमादि गणधर नमूँ, नमूँ साधु जग तात।।1।।

कुंदकुंद आम्नाय में, गच्छ सरस्वति मान्य।
बलात्कारगण ख्यात में, हुये सूरि जग मान्य।।2।।

इस युग के चूड़ामणी, शांतिसागराचार्य।
चारितचक्री धर्मधुरि, हुये प्रथम आचार्य।।3।।

इनके पट्टाधीश थे, वीरसागराचार्य।
मुझे आर्यिका व्रत दिया, नाम ज्ञानमति धार्य।।4।।

वीर संवत् पच्चीस सौ, बारह ज्येष्ठ सुमास।
शुक्लपंचमी श्रुत तिथी, मन में कर श्रुत वास।।5।।

श्रुतस्कंधपूजा विधी, पूर्ण किया श्रुतप्रीति।
हे श्रुतमातः! दो मुझे, जिनवर वच नवनीत।।6।।

जब तक श्रीजिनधर्म यह, जग में करे प्रकाश।
तब तक गणिनी ज्ञानमति, कृत विधान सुखराशि।।7॥

इस जग में जिनभक्त के, मन में करे प्रमोद।
श्रुतस्कंध सुविधान यह, जग को दे आलोक।।8।।

।। इति श्रुतस्कंधविधान प्रशस्तिः ।।

ज्ञान पचीसी व्रत विधि

ज्ञान पचीसी व्रत में ग्यारस के ग्यारह उपवास और चौदश के चौदह उपवास ऐसे कुल पचीस व्रत होते हैं। यह व्रत ग्यारह अंग और चौदह पूर्वरूप ज्ञान की आराधना के लिए किया जाता है। इसको श्रावण सुदी चतुर्दशी से करने का विधान है।

मतांतर से इस व्रत में दशमी के दश उपवास और पूर्णिमा के पंद्रह उपवास करने का भी विधान है।

इस व्रत में प्रधानरूप से श्रुतस्कंध यंत्र का अभिषेक एवं श्रुतज्ञान (सरस्वती) की पूजा करना चाहिए।

प्रत्येक व्रत की उत्तम विधि तो उपवास ही है। मध्यम एवं जघन्य विधि में शक्ति के अनुसार अल्पाहार या एकाशन करके भी व्रत किया जा सकता है। व्रत के दिन जिनेन्द्रदेव एवं श्रुतस्कंध यंत्र अथवा सरस्वती की मूर्ति का पंचामृत अभिषेक करके पूजा करें, पुनः सरस्वती के 108 नामों को पढ़ते हुए एक-एक मंत्रों का उच्चारण कर सुगंधित पुष्प, लवंग या पीले चावलों को चढ़ावें। अनंतर समुच्चय मंत्र से एक जाप्य करें।

समुच्चय जाप्य—ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूतद्वादशांगाय नमः।

ग्यारह अंग और चौदह पूर्वसंबंधी व्रतों में पृथक्-पृथक् जाप्य भी करना चाहिए।

ग्यारह अंग की 11 जाप्य—

1. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आचारांगाय नमः।
2. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सूत्रकृतांगाय नमः।
3. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-स्थानांगाय नमः।
4. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-समवायांगाय नमः।
5. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-व्याख्याप्रज्ञप्तिअंगाय नमः।
6. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-नाथधर्मकथांगाय नमः।
7. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उपासकाध्ययनांगाय नमः।
8. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अंतकृत्दशांगाय नमः।

9. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अनुत्तरोपपादिकदशांगाय नमः।
10. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रश्नव्याकरणांगाय नमः।
11. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विपाकसूत्रांगाय नमः।

चौदह पूर्वों की 14 जाप्य—

1. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-उत्पादपूर्वाय नमः।
2. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अग्रायणीयपूर्वाय नमः।
3. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-वीर्यानुप्रवादपूर्वाय नमः।
4. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय नमः।
5. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-ज्ञानप्रवादपूर्वाय नमः।
6. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-सत्यप्रवादपूर्वाय नमः।
7. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-आत्मप्रवादपूर्वाय नमः।
8. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कर्मप्रवादपूर्वाय नमः।
9. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्रत्याख्यानपूर्वाय नमः।
10. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-विद्यानुप्रवादपूर्वाय नमः।
11. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-कल्याणप्रवादपूर्वाय नमः।
12. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-प्राणावायप्रवादपूर्वाय नमः।
13. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-क्रियाविशालपूर्वाय नमः।
14. ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत-लोकबिंदुसारपूर्वाय नमः।

इस व्रत के 25 उपवास एक वर्ष में करें। ऐसे एक वर्ष तक या बारह[1] वर्ष तक भी यह व्रत किया जाता है। व्रत पूर्ण करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस व्रत के प्रसाद से मनुष्य श्रुतज्ञान को प्राप्त कर अगले भव में श्रुतकेवली होकर परम्परा से केवलज्ञान को प्राप्त करने में समर्थ हो जावेगा।

1. "व्रततिथिनिर्णय" पृ. 214, 216।

श्रुतस्कंधव्रत-विधि

भादों मास में भादों कृष्णा प्रतिपदा से लेकर आश्विन कृष्णा प्रतिपदा तक यह व्रत किया जाता है। इसमें एक महिने में उत्कृष्ट 16 उपवास, मध्यम 10 और जघन्य 8 उपवास करें। पारणा के दिन यथाशक्ति नीरस या एक- दो आदि रस छोड़कर एक बार भोजन (एकाशन) करें। 16 उपवास करने में प्रतिपदा से एक उपवास, एक पारणा ऐसे आश्विन कृ. प्रतिपदा तक 16 उपवास होंगे। ऐसे ही 10 उपवास में कृष्णपक्ष में दूज, पंचमी, अष्टमी, दशमी और चौदश तथा शुक्लपक्ष में भी 2,5,8,10 और 14 को उपवास करें। 8 उपवास में भी दो पंचमी, 2 अष्टमी, 2 दशमी और 2 चौदस ऐसे 8 उपवास करें। अथवा शक्ति अनुसार जैसे भी हो, वैसे ये उपवास करें।

प्रतिदिन जिनमंदिर में श्रुतस्कंध मंडल बनाकर श्रुतस्कंध विधान पूजन करें। इस व्रत में प्रतिदिन निम्नमंत्र का जाप्य करें—

"ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानेभ्यो नमः।"

यह व्रत बारह वर्ष तक करें अथवा पांच वर्ष करें। व्रत पूर्ण कर उद्यापन करें। मंदिर में 12-12 उपकरण—घंटा, पूजा के बर्तन, छत्र, चंवर, चंदोवा, चौकी, वेष्टन आदि भेंट करें। शास्त्र छपाकर मंदिर में रखें और मुनि-आर्यिकाओं को तथा श्रावकों को भी शास्त्र भेंट करें। सरस्वती भवन का निर्माण कर श्रुतदेवी की प्रतिमा या श्रुतस्कंध यंत्र स्थापित करें। जिनवाणी के उपदेश आदि द्वारा जैनधर्म की प्रभावना करें। इस प्रकार इस व्रत के प्रभाव से भव्यों को श्रुतज्ञान की वृद्धि होती है और अगले भव में श्रुतकेवली होकर वे परंपरा से केवलज्ञान की प्राप्ति कर लेते हैं।

व्रत की कथा—जंबूद्वीप के भरतक्षेत्र के आर्यखंड में अंग देश में पटना नगर है। उस नगर के राजा चंद्ररुचि की चन्द्रप्रभा रानी के श्रुतशालिनी नाम की एक कन्या थी। इसे आर्यिका जिनमती के पास विद्याध्ययन के लिए रखा गया। थोड़े ही दिनों में वह कन्या सर्वविद्या में निपुण हो गई। एक दिन श्रुतशालिनी ने एक चौकी पर श्रुतस्कंध मंडल बनाया। इसे देखकर आर्यिका जिनमती ने प्रसन्न होकर कन्या को विद्या में निष्णात समझकर राजा के यहाँ भेज दिया।

एक दिन उद्यान में पधारे वर्द्धमान मुनिराज की वंदना करके राजा ने पूछा—भगवन्! मेरी कन्या को इतने गुण और सुंदर रूप किस पुण्य से मिले हैं? मुनिराज ने कहा—राजन्! इसी जंबूद्वीप के पूर्वविदेह में पुष्कलावती देश में पुण्डरीकिणी नगरी है। वहाँ के राजा गुणभद्र और रानी गुणवती दोनों एक

समय सपरिवार श्री सीमंधर भगवान की वंदना को गये। यथायोग्य भक्ति, पूजा करके मनुष्य के कोठे में बैठ गये। पुनः दिव्य उपदेश सुनने के बाद श्रुतस्कंधव्रत का स्वरूप पूछा – तब गणधर देव ने कहा – जिनेन्द्रदेव की दिव्यध्वनि निरक्षरी वाणी है, यह अनंत भव्यों के हितार्थ होती है। भगवान की दिव्यध्वनि को वहाँ पर बैठे सभी भव्य अपनी-अपनी भाषा में समझ लेते हैं। भगवान की वाणी सात सौ अठारह भाषा में खिरती है। इसे सुनकर चार ज्ञान के धारी गणधरदेव द्वादशांगरूप में गूंथ लेते हैं।

द्वादशांग के नाम – 1. आचारांग 2. सूत्रकृतांग 3. स्थानांग 4. समवायांग 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति 6. ज्ञातृकथांग 7. उपासकाध्ययनांग 8. अंतकृत्दशांग 9. अनुत्तरौपपादिकदशांग 10. प्रश्नव्याकरणांग 11. सूत्रविपाकांग और 12. दृष्टिवादांग।

फिर इन्हीं के आधार से अनेक मुनिगण ग्रंथ रचना करते हैं। यह जिनेन्द्रवाणी समस्त लोक-अलोक के स्वरूप को और त्रिकालवर्ती पदार्थों को प्रदर्शित करने वाली है। समस्त प्राणियों का हित करने वाली है, मिथ्यामतों को दूरकर पूर्वापर विरोधी दोषों से रहित सच्चे धर्म का उपदेश देने वाली है।

अनेक प्रकार से उपदेश देकर श्रीगणधरदेव ने उन्हें श्रुतस्कंध व्रत की विधि बतलाई। राजा गुणभद्र और रानी गुणवती ने इस व्रत को वहीं समवसरण में गणधर गुरु से ग्रहण किया। पुनः विधिवत् इस व्रत को करके अंत में समाधिपूर्वक मरण कर अच्युत स्वर्ग में इन्द्र-इन्द्राणी हुए।

वहाँ से चयकर वह गुणवती रानी का जीव यहाँ तुम्हारी श्रुतशालिनी नाम की कन्या हुई है। इस प्रकार गुरुमुख से अपने भवांतर सुनकर उस कन्या ने पुनः श्रुतस्कंध व्रत धारण किया। पश्चात् चारित्र के प्रभाव से अंत में समाधिमरण कर स्त्रीलिंग छेदकर इन्द्रपद प्राप्त कर लिया।

कालांतर में इस श्रुतशालिनी के जीव पश्चिम विदेह के कुमुदवती देश के अशोक नगर में राजा पद्मनाभ की रानी जितपद्मा के "नयंधर" नाम के तीर्थंकर हुए हैं। ये कामदेव और चक्रवर्ती भी हुए हैं। नयंधर तीर्थंकर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर शुक्लध्यान के द्वारा कर्मों को नष्ट कर केवली हो गये, तब देवों ने समवसरण की रचना कर दी। इन्होंने अनेक देशों में विहार कर भव्यजीवों को धर्मामृत से तर्पित कर अंत में अघातिकर्मों का नाश करके मोक्षपद प्राप्त कर लिया है। इस प्रकार जो नर-नारी भावसहित इस व्रत का पालन करेंगे, वे अवश्य ही श्रुतज्ञान को पूर्ण कर केवलज्ञान को प्राप्त करेंगे।

श्रुतज्ञान व्रत

(1) श्रुतविधि उपवास में मतिज्ञान के 28, ग्यारह अंगों के 11, परिकर्म के 2, सूत्र के 88, प्रथमानुयोग का 1, चौदह पूर्वों के 14, पाँच चूलिका के 5, अवधिज्ञान के 6, मनः पर्ययज्ञान के 2 और केवलज्ञान का 1, ऐसे 158 उपवास करने होते हैं। एक-एक उपवास के बाद एक-एक पारणा होती है[1]।

(2) दूसरी विधि– श्रुतज्ञान व्रत में सोलह प्रतिपदाओं के 16 उपवास, तीन तृतीयाओं के 3, चार चतुर्थी के 4, पांच पंचमी के 5, छह षष्ठी के 6, सात सप्तमी के 7, आठ अष्टमी के 8, नौ नवमी के 9, बीस दशमी के 20, ग्यारह एकादशी के 11, बारह द्वादशी के 12, तेरह त्रयोदशी के 13, चौदह चतुर्दशी के 14, पंद्रह पूर्णिमासी के 15 एवं पंद्रह अमावस्या के 15 उपवास किये जाते हैं[2] यथा–)

16+3+4+5+6+7+8+9+20+11+12+13+14+15+15 = 158

(3) तृतीय विधि[3] –

अट्ठाईस मतिज्ञान के	–	प्रतिपदा के 28 उपवास
ग्यारह अंग श्रुतज्ञान के	–	ग्यारस के 11 उपवास
दो परिकर्म श्रुतज्ञान के	–	द्वितीया के 2 उपवास
अट्ठासी सूत्र श्रुतज्ञान के	–	अष्टमी के 88 उपवास
एक प्रथमानुयोग श्रुतज्ञान का	–	दशमी का 1 उपवास
चौदह पूर्वश्रुतज्ञान के	–	चतुर्दशी के 14 उपवास
पांच चूलिका श्रुतज्ञान के	–	पंचमी के 5 उपवास
छह अवधिज्ञान के	–	षष्ठी के 6 उपवास
दो मनःपर्ययज्ञान के	–	द्वितीया के 2 उपवास
एक केवलज्ञान का	–	नवमी का 1 उपवास

इन व्रतों के मंत्र निम्नलिखित हैं–

समुच्चय जाप्य– **ॐ ह्रीं श्रीमानसावग्रहादिकेवलज्ञानान्त्य-अष्टपंचाशदुत्तरशत प्रमाणज्ञानेभ्यो नमः।**

1. हरिवंशपुराण सर्ग 34, श्लोक 97। 2. व्रततिथि निर्णय पृ. 257।
3. ये श्रुतज्ञानव्रत विधि की तिथियाँअन्य पुस्तक से प्राप्त हुई हैं।
यदि उपवास की शक्ति न हो तो एक बार अल्पाहार या एकाशन से भी व्रत कर सकते हैं।

मतिज्ञान के २८ मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं मानस-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं रसनज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं चाक्षुष-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-अवग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-ईहा-मतिज्ञानाय नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-अवाय-मतिज्ञानाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रज-धारणा-मतिज्ञानाय नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं स्पर्शनेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं रसनेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं घ्राणेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं श्रोत्रेन्द्रिय-व्यंजनावग्रह-मतिज्ञानाय नमः।

11 अंगरूप श्रुतज्ञान के 11 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं आचारांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रकृतांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं स्थानांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं समवायांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं व्याख्याप्रज्ञप्ति-अंग-श्रुतज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञातृधर्मकथांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं उपासकाध्ययन-अंग-श्रुतज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं अंतकृत्-दशांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरौपपादिक-दशांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं प्रश्नव्याकरणांग-श्रुतज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं विपाकसूत्रांग-श्रुतज्ञानाय नमः।

परिकर्म के 2 भेद के 2 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिवादप्रथम-अवयवपरिकर्मणे नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं परिकर्म-अंतर्गत-चंद्रप्रज्ञप्ति-सूर्यप्रज्ञप्ति-जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति-द्वीपसागरप्रज्ञप्ति-व्याख्याप्रज्ञप्तिनाम-पंचविध-परिकर्म-श्रुतज्ञानेभ्यो नमः।

सूत्र के 88 भेद के 88 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापकर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यपापफलभोक्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वगतत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं चेतनत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं मूर्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं अशब्दत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं अगंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं अरूपत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं अस्पर्शत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं अरसत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं जीवहेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं स्वीकृतदेहप्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

14. ॐ ह्रीं अर्हं असंसारत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
15. ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
16. ॐ ह्रीं अर्हं ऊर्ध्वगतिशीलत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
17. ॐ ह्रीं अर्हं पारिणामिकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
18. ॐ ह्रीं अर्हं बहिरात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
19. ॐ ह्रीं अर्हं अंतरात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
20. ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
21. ॐ ह्रीं अर्हं पंचब्रह्ममयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
22. ॐ ह्रीं अर्हं ज्योतिरूपत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
23. ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगधर्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
24. ॐ ह्रीं अर्हं उपयोगित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
25. ॐ ह्रीं अर्हं त्रैरूप्यधर्मप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
26. ॐ ह्रीं अर्हं जीवास्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
27. ॐ ह्रीं अर्हं जीवनास्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
28. ॐ ह्रीं अर्हं जीवैकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
29. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानेकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
30. ॐ ह्रीं अर्हं जीवनित्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
31. ॐ ह्रीं अर्हं जीवानित्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
32. ॐ ह्रीं अर्हं वाच्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
33. ॐ ह्रीं अर्हं अवाच्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
34. ॐ ह्रीं अर्हं हेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
35. ॐ ह्रीं अर्हं अहेतुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
36. ॐ ह्रीं अर्हं कार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
37. ॐ ह्रीं अर्हं अकार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
38. ॐ ह्रीं अर्हं वस्तुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
39. ॐ ह्रीं अर्हं अवस्तुत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
40. ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
41. ॐ ह्रीं अर्हं अद्रव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
42. ॐ ह्रीं अर्हं बंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
43. ॐ ह्रीं अर्हं अबंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
44. ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

45. ॐ ह्रीं अर्हं अमुक्तत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
46. ॐ ह्रीं अर्हं भव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
47. ॐ ह्रीं अर्हं अभव्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
48. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमेयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
49. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमेयत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
50. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
51. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमाणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
52. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमातृत्त्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
53. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमातृत्त्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
54. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमितित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
55. ॐ ह्रीं अर्हं अप्रमितित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
56. ॐ ह्रीं अर्हं कर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
57. ॐ ह्रीं अर्हं अकर्तृत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
58. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
59. ॐ ह्रीं अर्हं अकर्मत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
60. ॐ ह्रीं अर्हं करणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
61. ॐ ह्रीं अर्हं अकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
62. ॐ ह्रीं अर्हं संप्रदानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
63. ॐ ह्रीं अर्हं असंप्रदानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
64. ॐ ह्रीं अर्हं अपादानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
65. ॐ ह्रीं अर्हं अनपादानत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
66. ॐ ह्रीं अर्हं संबंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
67. ॐ ह्रीं अर्हं असंबंधत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
68. ॐ ह्रीं अर्हं अधिकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
69. ॐ ह्रीं अर्हं अनधिकरणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
70. ॐ ह्रीं अर्हं क्रियात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
71. ॐ ह्रीं अर्हं अक्रियात्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
72. ॐ ह्रीं अर्हं विशेषणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
73. ॐ ह्रीं अर्हं अविशेषणत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
74. ॐ ह्रीं अर्हं विशेष्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
75. ॐ ह्रीं अर्हं अविशेष्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

76. ॐ ह्रीं अर्हं भावस्य भावशक्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
77. ॐ ह्रीं अर्हं भावस्याभावशक्तित्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
78. ॐ ह्रीं अर्हं भूत कार्यत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
79. ॐ ह्रीं अर्हं अव्यापकत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
80. ॐ ह्रीं अर्हं व्यापकत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
81. ॐ ह्रीं अर्हं अचेतनत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
82. ॐ ह्रीं अर्हं अंगुष्ठमात्रकत्वनिषेधप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
83. ॐ ह्रीं अर्हं श्यामकप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
84. ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थत्वप्रमाणनिषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
85. ॐ ह्रीं अर्हं निरन्वय-क्षणिकनिषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
86. ॐ ह्रीं अर्हं अद्वैत-एकान्त-निषेधकत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
87. ॐ ह्रीं अर्हं असर्वज्ञत्वप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।
88. ॐ ह्रीं अर्हं क्रम-अक्रम-अनेकांतप्रकाशक-सूत्र-श्रुतज्ञानाय नमः।

प्रथमानुयोग का 1 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोग-श्रुतज्ञानाय नमः।

चौदह पूर्व के 14 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं उत्पादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं अग्रायणीयपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं वीर्यानुप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं अस्ति-नास्तिप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं सत्यप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं आत्मप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्याख्यानपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
10. ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानुवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणानुप्रवादपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
12. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणावायपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
13. ॐ ह्रीं अर्हं क्रियाविशालपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।
14. ॐ ह्रीं अर्हं लोकविंदुसारपूर्व-श्रुतज्ञानाय नमः।

पांच चूलिका के 5 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं जलगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं स्थलगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं मायागताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं रूपगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगताचूलिका-श्रुतज्ञानाय नमः।

अवधिज्ञान के 6 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमान-अवधिज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं हीयमान-अवधिज्ञानाय नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं अवस्थित-अवधिज्ञानाय नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं अनवस्थित-अवधिज्ञानाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं अनुगामि-अवधिज्ञानाय नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं अननुगामि-अवधिज्ञानाय नमः।

मनः पर्ययज्ञान के 2 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिमनः पर्ययज्ञानाय नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिमनः पर्ययज्ञानाय नमः।

केवलज्ञान का 1 मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः।

पांच ज्ञानों के पृथक्-पृथक् मंत्र

1. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाविंशतिमतिज्ञानेभ्यो नमः।
2. ॐ ह्रीं अर्हं द्विविधपरिकर्मभ्यो नमः।
3. ॐ ह्रीं अर्हं अष्टाशीतिसूत्रेभ्यो नमः।
4. ॐ ह्रीं अर्हं प्रथमानुयोगाय नमः।
5. ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्यो नमः।
6. ॐ ह्रीं अर्हं पंचचूलिकाभ्यो नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं षड्विध अवधिज्ञानेभ्यो नमः।
8. ॐ ह्रीं अर्हं द्विविध मनःपर्ययज्ञानेभ्यो नमः।
9. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानाय नमः।

षट्खण्डागम ग्रंथ पूजा

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना (शंभु छंद)–

जिनशासन का प्राचीन ग्रंथ, षट्खंडागम माना जाता।
प्रभु महावीर की दिव्यध्वनि से, है इसका सीधा नाता।।
जब द्वादशांग का ज्ञान धरा पर, विस्मृत होने वाला था।
तब पुष्पदंत अरु भूतबली ने, आगम यह रच डाला था।।1।।

–दोहा–

षट्खंडागम ग्रंथ की, पूजन करूँ महान।
मन में श्रुत को धार कर, पा जाऊँ श्रुतज्ञान।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथराज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

–अष्टक–

(तर्ज–मैं चंदन बनकर........)

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
ज्ञानामृत पीने से, भव बाधा नशती है।
हम जल की झारी लाए, त्रयधारा करने को।।हम.।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।

चन्दन की शीतलता तो, कुछ क्षण ही रहती है।
शाश्वत शीतलता हेतु, श्रुतपूजन कर लूँ मैं।।हम.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
श्रुतवारिधि में रमने से, अक्षय पद मिलता है।
हम अक्षत लेकर आए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
स्वाध्याय परमतप द्वारा, विषयाशा नशती है।
हम पुष्पों को ले आए, पुष्पांजलि करने को।।हम.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
ज्ञानामृत का आस्वादन, ही सच्चा भोजन है।
नैवेद्य थाल ले आए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
सम्यग्दर्शन का दीपक, मन का मिथ्यात्व भगाता।
इक दीप जलाकर लाए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धांतिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
कर्मों की धूप जलाऊँ, निज ध्यान की अग्नि में।
हम धूप सुगंधित लाए, श्रुत अर्चन करने को।।हम.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
फल के स्वादों में फँसकर, नहिं मुक्ति सुफल को पाया।
अब थाल फलों का लाए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
कोमल मृदु वस्त्रों द्वारा, निज तन को सदा ढका है।
अब वस्त्र बनाकर लाए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

हम पूजा करने आए, सैद्धान्तिक ग्रंथों की।
हम थाल सजाकर लाए, हैं आठों द्रव्यों की।।टेक.।।
जिनवाणी के अध्ययन से, इक दिन अनर्घ्य पद मिलता।
''चंदना'' अर्घ्य ले आए, श्रुत पूजन करने को।।हम.।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीषट्खंडागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— **षट्खंडागम ग्रंथ के, सम्मुख कर जलधार।**
ज्ञान और चारित्र से, करूँ भवाम्बुधि पार।।11।।

शान्तये शांतिधारा।

विविध पुष्प की वाटिका, से पुष्पों को लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, श्रुत समुद्र के मांहि।।12।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

—शंभु छंद—

पहला है जीवस्थान खण्ड, छह पुस्तक की टीका इसमें।
दो सहस तीन सौ पिचहत्तर, सूत्रों का सार भरा इसमें।।
अनुयोग आठ नव चूलिकाओं, में सत्प्ररूपणा आदि कथन।
यह ज्ञान मुझे भी मिल जावे, इस हेतु करूँ श्रुत का अर्चन।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टअनुयोगनवचूलिकासमन्वितजीवस्थाननामप्रथम-खण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम का दुतिय खण्ड, है क्षुद्रकबंध कहा जाता।
पन्द्रह सौ चौरानवे सूत्र से, सहित ग्रंथ यह कहलाता।।
सप्तम पुस्तक में है निबद्ध, यह बंध का प्रकरण बतलाता।
इस श्रुत का अर्चन करूँ कर्म, ज्ञानावरणी तब नश जाता।।2।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधप्रकरणसमन्वितक्षुद्रकबंधनामद्वितीयखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है तृतियबंधस्वामित्वविचय, का खण्ड आठवीं पुस्तक में।
त्रय शतक व चौबिस सूत्रों के, द्वारा सिद्धान्त कथन इसमें।।
जो मन वच तन की शुद्धि सहित, इस आगम का अध्ययन करें।
वे कर्मबंध से छुट जाते, हम अर्घ्य चढ़ाकर नमन करें।।3।।

ॐ ह्रीं कर्मबंधादिसिद्धान्तकथनसमन्वितबंधस्वामित्वविचय-नामतृतीयखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेदनाखण्ड नामक चतुर्थ है, खण्ड चार पुस्तक निबद्ध।
नौ से बारह तक चारों में, पन्द्रह सौ चौदह सूत्र बद्ध।।

इन शास्त्रों की पूजन से मन का, कर्म असाता नश जाता।
गौतमगणधर विरचित मंगल-सूत्रों की है इसमें गाथा।।4।।

ॐ ह्रीं ऋद्ध्यादिवर्णनसमन्वितवेदनाखण्डनामचतुर्थखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम का पंचम है, वर्गणा खण्ड आचार्य ग्रथित।
हैं एक सहस तेईस सूत्र, तेरह से सोलह तक पुस्तक।।
धरसेनसूरि सम गिरि से गिरती, गंगा मानो प्रगट हुई।
श्री पुष्पदंत अरु भूतबली के, अन्तस्तल से उदित हुई।।5।।

ॐ ह्रीं गणितादिनानाविषयसमन्वितवर्गणाखण्डनामपंचमखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम के छठे खण्ड में, महाबंध का नाम सुना।
है महाधवल टीका उस पर, श्रीवीरसेनस्वामी ने रचा।।
इस तरह बना षट्खण्डागम, महावीर दिव्यध्वनि अंश कहा।
ये सूत्र ग्रंथ कहलाते हैं, इनकी पूजन से सौख्य महा।।6।।

ॐ ह्रीं महाधवल टीकासमन्वितमहाबंधनामषष्ठखण्डजिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदंत अरु भूतबली, गुरु की कृति षट्खण्डागम है।
नौ हजार सूत्रों से संयुत, इस युग का यह श्रुत अनुपम है।।
बानवे सहस्र श्लोकों प्रमाण, टीका भी इसकी लिखी गई।
श्रीवीरसेन स्वामी कृत धवला, टीका को मैं जजूँ यहीं।।7।।

ॐ ह्रीं धवलामहाधवलाटीकासमन्वित षट्खंडागम जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीगुणधर भट्टारक विरचित, है कषायप्राभृत ग्रंथ कहा।
जयधवला टीका संयुत सोलह, पुस्तक में उपलब्ध यहाँ।।
है द्वादशांग का पूर्ण सार, इन सब ग्रंथों में भरा हुआ।
इनके अतिरिक्त न सार कोई, अर्चन का मन इसलिए हुआ।।8।।

ॐ ह्रीं जयधवला टीकासमन्वितकषायप्राभृत जिनागमाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षट्खण्डागम के सूत्रों पर, गणिनी श्री ज्ञानमती जी ने।
संस्कृत टीका सिद्धान्तसुचिन्तामणि रचकर दी इस युग में।।
श्रीवीरसेन आचार्य सदृश यह, टीका भी निधि इस युग की।
चिन्तामणि सम फल दात्री उस, टीकायुत ग्रंथ को करूँ नती।।9।।

ॐ ह्रीं सिद्धान्तचिन्तामणिटीकासमन्वितषट्खण्डागम जिनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र –**ॐ ह्रीं सिद्धान्तज्ञानप्राप्तये षट्खण्डागम जिनागमाय नमः।**

जयमाला

–शेर छंद –

जैवन्त हो महावीर दिव्यध्वनि जगत में।
जैवन्त हो गौतम गणीश ज्ञान जगत में।।
जैवन्त हो उन रचित द्वादशांग जगत में।
जैवन्त हो उपलब्ध शास्त्र अंश जगत में।।1।।

गौतम ने अपना ज्ञान फिर लोहार्य को दिया।
लोहार्य स्वामी से वो जम्बूस्वामी ने लिया।।
क्रमबद्ध ये त्रय केवली निर्वाण को गये।
फिर पाँच मुनी चौदह पूर्व धारी हो गये।।2।।

नंतर विशाखाचार्य आदि ग्यारह मुनि हुए।
एकादशांग पूर्व दश के पूर्ण ज्ञानी थे।।
अरु शेष चार पूर्व का इक देश ज्ञान पा।
परिपाटी क्रम से उसको जगत में भी दिया था।।3।।

नक्षत्राचार्य आदि पाँच मुनियों ने क्रम से।
पाया था वही ज्ञान एक देश अंश में।।
नंतर सुभद्र आदि चार मुनियों ने पाया।
इक अंग ज्ञान देश अंश ज्ञान भी पाया।।4।।

यह ज्ञान पुनः क्रम से श्रीधरसेन को मिला।
अतएव वर्तमान में श्रुत का कमल खिला।।
इस श्रुत की कहानी सुन रोमांच होता है।
शिष्यों के समर्पण का परिज्ञान होता है।।5।।

निज आयु अल्प जान दो मुनियों को बुलाया।
निज ज्ञान उन्हें सौंप मन में हर्ष समाया।।
मुनिराज नर वाहन तथा सुबुद्धि ने सोचा।
गुरु ज्ञानवाटिका की मैं समृद्धि करूँगा।।6।।

गुजरात अंकलेश्वर में चौमासा रचाया।
फिर ज्ञान को लिपिबद्ध करना मन में था आया।
मुनिवर सुबुद्धि जी ने सत्प्ररूपणा रची।
मुनिराज नरवाहन के पास उसे भेज दी।।7।।

आगे उन्होंने द्रव्यप्रमाणानुगम आदी।
षट्खण्डों में छह सहस सूत्रों की भी रचना की।
फिर ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी की तिथि आ गई।
आगम की रचना पूर्ण कर संतुष्टि छा गई।।8।।

तब संघ चतुर्विध ने श्रुत की अर्चना कर ली।
देवों ने भी आकर गुरु की वंदना कर ली।।
मुनिवर सुबुद्धि जी की दंतपंक्ति बनाई।
कह पुष्पदंत उनकी महापूजा रचाई।।9।।

मुनिराज नरवाहन को पूजा भूत सुरों ने।
बलिविधि के साथ भूतबली कहा उन्होंने।।
वे इस प्रकार पुष्पदंत भूतबलि बने।
षट्खंड जिनागम को जीत चक्रपति बने।।10।।

सिद्धांतचक्रवर्ती थे धरसेन जी सचमुच।
श्री पुष्पदंत भूतबली में भी थे ये गुण।।
पश्चात्वर्ति मुनि भी उनके अंशरूप हैं।
जिनको मिला सिद्धान्त ज्ञान साररूप है।।11।।

त्रयखण्ड पे परिकर्म टीका कुन्दकुन्द की।
थी पद्धति द्वितीय टीका शामकुण्ड की।।
श्रीतुम्बुलूर सूरि ने टीका की पंचिका।
स्वामी समन्तभद्र ने चौथी रची टीका।।12।।

श्री बप्पदेव गुरु ने लिखी व्याख्याप्रज्ञप्ती।
धवलादि टीकाओं के कर्ता वीरसेन जी।।
इन छह में मात्र धवला उपलब्ध आज है।
पाँचों ही शेष टीका के नाम मात्र हैं।।13।।

सदि बीसवीं में भी मिले सिद्धान्त ग्रंथ ये।
चारित्रचक्रवर्ति शांतिसिंधु जी की कृपा से।।
इन सबको ताम्रपत्र पे उत्कीर्ण कराया।
विद्वानों से टीकाओं का अनुवाद कराया।।14।।

संस्कृत तथा प्राकृत में मिश्र है धवल टीका।
अतएव मणिप्रवालन्याय युक्त है टीका।।
इसका ही ले आधार ज्ञानमती मात ने।
टीका रची सिद्धान्तचिन्तामणि नाम से।।15।।

इन सबकी टीकाओं को बार-बार मैं नमूँ।
षट्खण्ड जिनागम में मूलग्रंथ को प्रणमूँ।।
मुझको भी इन्हें पढ़ने की शक्ति प्राप्त हो।
माता सरस्वती मुझे तव भक्ति प्राप्त हो।।16।।

षट्खण्ड धरा जीत चक्रवर्ति ज्यों बनें।
षट्खंडजिनागम को भी त्यों ही जो पढ़ें।।
सिद्धान्तचक्रवर्ति वे हों 'चन्दनामती'।
पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ करूँ मैं वन्दना-भक्ती।।17।।

–दोहा–

षट्खण्डागम ग्रंथ को, वंदन बारम्बार।
अर्घ्य समर्पण कर लहूँ, जिनवाणी का सार।।18।।

ॐ ह्रीं षट्खण्डागमसिद्धान्तग्रंथेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–सोरठा–

जो पूजें चितलाय, षट्खंडागम शास्त्र को।
निज अज्ञान नशाय, वे पावें श्रुतसार को।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

गिरनारिक्षेत्र सुरक्षामंत्र

ॐ ह्रीं सर्वाण्ह यक्ष-कूष्माण्डी यक्षी सहिताय श्री नेमिनाथाय नमः।

श्री षट्खण्डागम ग्रंथ स्तुति

वन्दन शत शत बार है,
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन शत शत बार है।
श्री सिद्धान्तसुचिन्तामणि टीका जिसमें साकार है।।

वीर प्रभू के शासन का, सबसे पहला यह ग्रंथ है।
लिखने वाले पुष्पदंत अरु, भूतबली निर्ग्रन्थ हैं।
श्री धरसेनाचार्य से जिनको, मिला ज्ञान भण्डार है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वंदन बारम्बार है।।1।।

वीरसेन सूरी ने इस पर, धवला टीका रच डाली।
प्राकृत संस्कृत के वचनों में, मोतीमाल बना डाली।।

गूढ़ रहस्यों सहित ग्रंथ वह, विद्वत्मणि सरताज है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन बारम्बार है।।2।।

गणिनी माता ज्ञानमती ने, नव इतिहास बनाया है।
संस्कृत टीका सरल रची, सिद्धान्तसार समझाया है।।
चिन्तामणि सम चिन्तित फल, देने में जो साकार है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन बारम्बार है।।3।।

श्री धरसेन व पुष्पदंत, आचार्य भूतबलि को वंदन।
वीरसेन गुरु को वंदूँ और, गणिनी ज्ञानमती को नमन।।
इनसे ही ''चन्दनामती'' यह मिला जिनागम सार है।
षट्खण्डागम ग्रंथराज को, वन्दन बारम्बार है।।4।।

श्री षट्खण्डागम ग्रंथराज की मंगल आरती

रचयित्री-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज –चाँद मेरे आ जा रे...............

आज हम आरति करते हैं–2
षट्खण्डागम ग्रंथराज की, आरति करते हैं।।
महावीर प्रभू के शासन का, ग्रंथ प्रथम कहलाया।
उनकी वाणी सुन गौतम, गणधर ने सबको बताया।।
आज हम आरति करते हैं–2
वीरप्रभू के परम शिष्य की, आरति करते हैं।।1।।

क्रम परम्परा से यह श्रुत, धरसेनाचार्य ने पाया।
निज आयु अल्प समझी तब, दो शिष्यों को बुलवाया।।
आज हम आरति करते हैं–2
श्री धरसेनाचार्य प्रवर की, आरति करते हैं।।2।।

मुनि नरवाहन व सुबुद्धी, ने गुरु का मन जीता था।
देवों ने आ पूजा कर, उन नामकरण भी किया था।।
आज हम आरति करते हैं–2
पुष्पदंत अरु भूतबली की, आरति करते हैं।।3।।

श्री वीरसेन सूरी ने, इस ग्रंथराज के ऊपर।
धवला टीका रच करके, उपकार कर दिया जग पर।।
आज हम आरति करते हैं–2
वीरसेन आचार्य प्रवर की, आरति करते हैं।।4।।

गणिनी माँ ज्ञानमती ने, इस ग्रंथ की संस्कृत टीका।
लिखकर सिद्धान्तसुचिन्तामणि नाम दिया है उसका।।
आज हम आरति करते हैं–2
श्री सिद्धान्तसुचिन्तामणि की, आरति करते हैं।।5।।

चन्दनामती माताजी, माँ ज्ञानमती की शिष्या।
हिन्दी अनुवाद किया है, इस चिन्तामणि टीका का।।
आज हम आरति करते हैं–2
सरल-सरस टीका की ''सारिका'' आरति करते हैं।।6।।

अष्टसहस्री ग्रंथ पूजा

रचयित्री - आर्यिका चन्दनामती

–स्थापना (चौबोल छंद)–

जिनशासन का इक न्याय ग्रंथ है, अष्टसहस्री कहें जिसे।
इक सहस वर्ष पहले श्री, विद्यानंदि सूरि ने रचा उसे।।
देवागम का स्तोत्र आप्त-मीमांसा से जो ख्यात हुआ।
उसकी टीका के ग्रंथ को अष्ट-सहस्री नाम है प्राप्त हुआ।।1।।

–दोहा–

अष्टसहस्री ग्रंथ का, अर्चन है सुखकार।
ज्ञान प्राप्त हो न्याय का, अनेकांत का सार।।2।।
आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
इस विधि से ही आतमा, होवे पूज्य महान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअष्टसहस्रीन्यायग्रंथराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीअष्टसहस्रीन्यायग्रंथराज! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीअष्टसहस्रीन्यायग्रंथराज! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

–अष्टक –

(चाल –नंदीश्वर श्री जिनधाम........)

ले ज्ञानामृत का नीर, निज मन तृप्त करूँ।
मिटे जन्मजरा की पीर, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूँ हरषा के।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

ले चंदन श्वेत कपूर, मन में सुरभि भरूँ।
संसारताप हो दूर, श्रुत को श्रवण करूँ।।

वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अक्षत धवल अनूप, मन को सुखद करूँ।
अक्षयपद हो अनुकूल, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

ले विविध वर्ण के फूल, निजमन चमन करूँ।
हो काम व्यथा सब दूर, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ले नानाविध पकवान, श्रुत का यजन करूँ।
हो क्षुधारोग की हानि, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले दीप कनकमय थाल, ज्ञानप्रकाश भरूँ।
हो मोह तिमिर का नाश, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अगर तगर की धूप, जग में सुरभि भरूँ।
हों अष्टकर्म सब दूर, श्रुत को श्रवण करूँ।।

वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ले फल अंगूर अनार, श्रुत का यजन करूँ।
मिले मोक्ष महाफल सार, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

ले कोमल वस्त्र अनेक, श्रुत का यजन करूँ।
निज आत्मसुरक्षा हेतु, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय वस्त्रं निर्वपामीति स्वाहा।

ले अष्टद्रव्य का थाल, श्रुत का यजन करूँ।
''चन्दना'' मिले निजधाम, श्रुत को श्रवण करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषा के।।10।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टसहस्री न्याय ग्रंथाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **ले जल का उत्तम पात्र, शान्तीधार करूँ।**
मिले रत्नत्रय का सार, भवदधि पार करूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषाके।।11।।

शान्तये शांतिधारा।

ले चंपक हरसिंगार, पुष्पांजलि कर लूँ।
गुण पुष्प से हो श्रृंगार, मन पावन कर लूँ।।
वर अष्टसहस्री ग्रंथ, पूजूँ मन लाके।
सर्वोच्च न्याय का ग्रंथ, वंदूं हरषाके।।12।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

तर्ज –मिलो न तुम तो...............

अष्टसहस्री ग्रंथराज की पूजन करने आए,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।टेक.।।

आठ सहस्र श्लोकों की, संख्या वाली टीका है इस ग्रंथ में। हो.......
आचार्य विद्यानन्द की, ज्ञान गंगा है इस ग्रंथ में।।हो........
कष्टसहस्री कहते जिसको उसी को अर्घ्य चढ़ाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।1।।

मोक्षशास्त्र ग्रंथ में जो, मंगलाचरण है उमास्वामी का। हो.....
मोक्षमार्ग के नेता को, वंदन किया है शिवपथगामी का।।हो.......
उसी मूल मंगलाचरण को हम भी मन में ध्याएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।2।।

श्री समन्तभद्र मुनि का, उस पर ही देवागमस्तोत्र है। हो......
एक शतक चौदह जिसमें, संस्कृत के सुन्दर श्लोक हैं।।हो........
वही आप्तमीमांसा पुस्तक हम भी पढ़ें-पढ़ाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।3।।

उसी आप्तमीमांसा पर, आचार्य श्री अकलंक देव ने। हो.......
अष्टशती नाम का इक, ग्रंथ लिख दिया है उन गुरुदेव ने।। हो........
आठ शतक श्लोक सहित उस ग्रंथ को शीश नमाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।4।।

आचार्य विद्यानंदी, ने भी आप्तमीमांसा पर लिख दिया। हो.......
आठ सहस्र श्लोकों में, अष्टसहस्री ग्रंथ रच दिया।। हो........
उसी न्यायदर्शन के ग्रंथ की पूजन यहाँ रचाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।5।।

कठिन-कठिन इस टीका में, अष्टशती की पंक्ती भी गूंथी हैं। हो.......
अनेकान्त की पुष्टी में, एक मात्र ग्रंथ यही पूंजी है।। हो.......
सप्तभंग, सर्वज्ञसिद्धि विषयों में रुचि बढ़ जाए,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।6।।

संस्कृत के क्लिष्टतम इस, ग्रंथ को न कोई समझ पाते थे। हो......
बिरले ही विद्वानों के, द्वारा ऐसे शास्त्र पढ़े जाते थे।। हो.......
देख-देख कर उसी ग्रंथ को हम भी हर्ष मनाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।7।।

ज्ञानमती माता गणिनी, आर्यिका प्रसिद्ध हुईं इस युग में। हो........
अपने शिष्य शिष्याओं को, अध्ययन कराया इसी ग्रंथ से।। हो.......
बिना किसी से पढ़े ग्रंथ की टीका स्वयं रचाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।8।।

उन्नीस सौ इकहत्तर सन्, पौष शुक्ला बारस की तिथि आ गई। हो......
डेढ़ वर्ष के श्रम द्वारा, हिन्दी टीका पूर्णता को पा गई।। हो.......
राजस्थान के टोडारायसिंह नगर में वे क्षण आए,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।9।।

ग्रंथ को नमन कर उसके, रचनाकार गुरुओं को भी मैं नमूँ। हो.......
श्री समन्तभद्र एवं, भट्टाकलंक गुरुवर को प्रणमूँ।। हो........
इनकी कृति से अष्टसहस्री मूलग्रंथ को पाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।10।।

इक हजार वर्ष पहले, के सूरि विद्यानन्दी को नमन। हो......
स्याद्वादचिन्तामणि, हिन्दी टीकाकर्त्री माता को वन्दन।। हो........
गणिनी माता ज्ञानमती को शत-शत शीश झुकाएँ,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।11।।

अपने-अपने ग्रंथालय में, अष्टसहस्री ग्रंथ रखना है। हो.......
''चन्दनामती'' अब उसका, अध्ययन भी हमसबको करना है।। हो........
सभी मतों को जान-जानकर अनेकांत को पाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।12।।

जिनवाणी माँ की प्रतिकृति, अष्टसहस्री को अर्घ्य चढ़ाना है। हो.......
न्याय का उजाला पाकर, अन्याय का तिमिर भगाना है।। हो........
स्याद्वादचिन्तामणि टीका सहित ग्रंथ अपनाएं,
ज्ञान की ज्योति जलेगी।।13।।

ॐ ह्रीं स्याद्वादचिंतामणि हिन्दी टीका समन्वित अष्टसहस्रीमहाग्रंथाय जयमाला पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शंतिधारा। पुष्पांजलिः।

अष्टसहस्री ग्रंथ को, नमन करूँ शत बार।
ज्ञान ज्योति प्रगटित करूँ, मन में अपरम्पार।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत्
शांतिकराय सर्वोपद्रव शांतिं
कुरु कुरु ह्रीं नमः

आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी की पूजन

रचयित्री-आर्यिका चन्दनामती

(तर्ज –माता तु दया करके........)

गुरुवर तेरी पूजा ही, मुझे पूज्य बनाएगी।
तेरी सौम्य सहज मुद्रा, मेरे मन में समाएगी।।
हे कुन्दकुन्द स्वामी, तव आत्मा कुन्दन है।
हे पद्मनन्दि स्वामी, तुमको मम वन्दन है।।
यह पादवन्दना ही, मनकलियाँ खिलाएगी।
गुरुवर तेरी पूजा ही, मुझे पूज्य बनाएगी।।1।।
आह्वानन करके प्रभो, तुझे मन में बिठाऊँ मैं।
पावन मन करके गुरो, अब पूजा रचाऊँ मैं।।
नैया तेरी भक्ती से, भवदधि तिर जाएगी।
गुरुवर तेरी पूजा ही, मुझे पूज्य बनाएगी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्यप्रवर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्यप्रवर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्यप्रवर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

–अष्टक (शंभु छंद) –

जग के स्वादिष्ट रसों को भी पीने से तृषा न शान्त हुई।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी से वह तृष्णा कुछ उपशांत हुई।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन का लेपन बहुत किया, पर मन का ताप न शान्त हुआ।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी से, अब वह भी कुछ उपशान्त हुआ।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षत विक्षत आतम का उपवन, नहिं अक्षय पद को प्राप्त हुआ।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी का, अब उस पर बहुत प्रभाव हुआ।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की सौरभ ने, सारे जग को भरमाया है।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी से, अब कुछ विराग मन भाया है।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

मीठे नमकीन व्यंजनों को, खाकर भी क्षुधा सताती है।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी से, वह भूख स्वयं नश जाती है।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा

मन की विद्युत तो चंचल है, मन में न उजाला कर सकती।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी ही, मन में उजियारा भर सकती।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

धूपों की गंध ग्रहण करने, को घ्राणेन्द्रिय की आदत है।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी का, हे भव्य! करो तुम स्वागत है।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम फल खाकर के भी मेरे, मन की तृप्ती नहीं हुई।
प्रभु कुन्दकुन्द की वाणी सुन, मेरे मन में संतृप्ति हुई।।

हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय मोक्षफलप्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों द्रव्यों की सामग्री से, अर्घ्य बनाया जाता है।
प्रभु कुन्दकुन्द की पूजा करके, फल अनर्घ्य मिल जाता है।।
हे योगीश्वर तव चरणों में, बस यही प्रार्थना है मेरी।
तुम सम ही ज्ञान मिले मुझको, बस यही कामना है मेरी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – तीन रत्न धारी गुरु, के पद में त्रय बार।
शान्तीधारा मैं करूँ, होवे शान्ति अपार।।

शान्तये शांतिधारा।

कुन्द पुष्प की माल ले, पूजन करूँ महान।
बारह विध तप धार के, पा जाऊँ कुछ ज्ञान।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

–शंभुछंद–

श्री देव शास्त्र गुरु तीन रत्न, जिनवरशासन में माने हैं।
ये सम्यक्दर्शनज्ञान और, चारित्र को देने वाले हैं।।
अरिहन्त सिद्ध हैं देव कहे, जिनने कर्मों का नाश किया।
अरिहन्त कथित जिनवाणी को ही, परम्परा से शास्त्र कहा।।1।।

गुरुदेव तीसरे रत्न कहे, इन महिमा का क्या कथन करूँ।
श्री कुन्दकुन्द गुरु के चरणों में, श्रद्धा से मैं नमन करूँ।।
अन्तिम श्रुतकेवलि भद्रबाहु की, परम्परा में कुन्दकुन्द।
कलिकाल के ये सर्वज्ञ हुए, इन अपरनाम है पद्मनन्दि।।2।।

श्री वक्रग्रीव अरु गृद्धपिच्छ, एवं श्रीएलाचार्य कहे।
इन पाँचों नामों से संयुत, श्रीकुन्दकुन्द आचार्य हुए।।

निज संघ सहित गिरनार गिरी, वन्दनकर धर्म प्रसार किया।
निर्ग्रन्थ दिगम्बर पंथ सत्य, यह धरती पर साकार किया।।3।।

जाकर विदेह में सीमंधर की, दिव्यध्वनि का पान किया।
फिर आध्यात्मिक तप की वृद्धी से, चारणऋद्धी प्राप्त किया।।
साहित्य जगत में कुन्दकुन्द, स्वामी का नाम प्रसिद्ध हुआ।
चौरासी पाहुड़, षट्खण्डागम, टीका का भी सृजन किया।।4।।

दशभक्ति, अष्टपाहुड़, पंचास्तिकाय व द्वादश अनुप्रेक्षा।
है समयसार अध्यात्म ग्रंथ, प्रवचनसारादिक को भी रचा।।
शुभ नियमसार अरु रयणसार, मुनियों का मूलाचार रचा।
इक कुरलकाव्य है काव्य महा, जिसमें कवियों का सार रखा।।5।।

इनमें कुछ ही उपलब्ध आज, हो रहे जिनागम हम सबको।
जिनको पढ़कर के तत्त्व ज्ञान भी, प्राप्त हो रहा हम सबको।।
आचार्य प्रवर तो चले गए, उनकी यशगाथा जीवित है।
दो सहस्र वर्ष के बाद आज भी, उनके गुण की कीमत है।।6।।

गुरुदेव! तुम्हारे गुणमणि की, जयमाल गूँथकर लाए हैं।
हे कुन्दकुन्द स्वामी! पूजन का, थाल सजा हम लाए हैं।।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती की शिष्या इक 'चन्दनामती'।
तुम गुणकीर्तन करते-करते वह चाह रही है सिद्धगती।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्दकुन्दाचार्य देवाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर संवत पच्चीस सौ, तेइस[1] वर्ष महान।
श्रावण सुदिएकादशी, रचना पूरन जान।।
मंगलमय श्री वीर हैं, मंगल गणधर देव।
कुन्दकुन्द मंगल करें, मंगल धर्म सदैव।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

1. सन् 1997।

सरस्वती माता की आरती

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आरति करो रे,
जिनवाणी माता सरस्वती की आरति करो रे।
द्वादशांगमय श्रुतदेवी का, श्रेष्ठ तिलक सम्यग्दर्शन।
वस्त्र धारतीं चारित के, चौदह पूरब के आभूषण।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
आकार सहित उन श्रुतदेवी की, आरति करो रे।।1।।

इनके आराधन से ज्ञाना-वरण कर्मक्षय होता है।
मति श्रुत ज्ञान प्राप्त होकर, अज्ञान स्वयं व्यय होता है।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
तीर्थंकर प्रभु की दिव्यध्वनि की, आरति करो रे।।2।।

मनपर्ययज्ञानी गणधर भी, श्रुत आराधन करते हैं।
तभी घातिया कर्म नाशकर, केवलज्ञानी बनते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
कैवल्यमयी शीतलवाणी की, आरति करो रे।।3।।

मुनि के अंग पूर्व की महिमा, तो आगम में मिलती है।
सम्यग्दृष्टि आर्यिका ग्यारह, अंगों को पढ़ सकती हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
सौंदर्यवती माँ सरस्वती की, आरति करो रे।।4।।

शुभ्र वस्त्र धारणी हंस-वाहिनी सरस्वति माता हैं।
यही ''चन्दनामती'' ज्ञान-किरणों से युत श्रुतमाता हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो रे,
श्रुतज्ञान समन्वित सरस्वती की, आरति करो रे।।5।।

द्वादशांग सरस्वती स्तोत्रं

आर्याछंद—

बारह अंगगिज्जा, दंसणतिलया चरित्तवत्थहरा।
चौद्दस पुव्वा हरणा, ठावे दव्वाय सुयदेवी।।1।।

अनुष्टुप—

आचारशिरसं सूत्र-कृतवक्त्रां सुकंठिकाम्।
स्थानेन समवायांग-व्याख्या प्रज्ञप्तिदोर्लताम्।।2।।
वाग्देवतां ज्ञातृकथो-पासकाध्ययनस्तनीम्।
अंतकृद्दशसन्नाभि - मनुत्तरदशांगतः।।3।।
सुनितंबां सुजघनां, प्रश्नव्याकरणश्रुतात्।
विपाकसूत्रदृग्वाद-चरणां चरणांबराम्।।4।।
सम्यक्त्वतिलकां पूर्व-चतुर्दशविभूषणाम्।
तावत्प्रकीर्णकोदीर्ण-चारुपत्रांकुरश्रियम्।।5।।
आप्तदृष्टप्रवाहौघ-द्रव्यभावाधिदेवताम्।
परब्रह्मपथादृप्तां, स्यादुक्तिं भुक्तिमुक्तिदाम्।।6।।

वसंततिलकाछंद—

निर्मूलमोहतिमिरक्षपणैकदक्षं, न्यक्षेण सर्वजगदुज्ज्वलनैकतानम्।
सोषेस्व चिन्मयमहो जिनवाणि! नूनं, प्राचीमतो जयसि देवि तदल्पसूतिम्।।7।।

स्वागताछंद—

आभवादपि दुरासदमेव, श्रायसं सुखमनन्तमचिंत्यम्।
जायतेऽद्य सुलभं खलु पुंसां, त्वत्प्रसादत इहांब! नमस्ते।।8।।

उपजातिछंद—

चेतश्चमत्कारकरा जनानां, महोदयाश्चाभ्युदयाः समस्ताः।
हस्ते कृताः शस्तजनैः प्रसादात्, तवैव लोकांब! नमोस्तु तुभ्यम्।।9।।

मालिनीछंद—

सकलयुवतिसृष्टेरंब! चूणामणिस्त्वं, त्वमसि गुणसुपुष्टेर्धर्मसृष्टेश्च मूलम्।
त्वमसि च जिनवाणि! स्वेष्टमुक्त्यंगमुख्या, तदिह तव पदाब्जं भूरिभक्त्या नमामः।10।।

1. प्रतिष्ठाातिलक पृ. 761-762 से।

द्वादशांग सरस्वती स्तोत्र

भावार्थ—बारह अंगों से निर्मित—बनायी गई द्रव्यरूप श्रुतदेवी की स्थापना करे। इन देवी के सम्यग्दर्शन तिलक है, चारित्र वस्त्र हैं और चौदह पूर्व आभूषण हैं।

इसी का विशेष स्पष्टीकरण संस्कृत श्लोकों में है। यथा—

सरस्वती का शिर—मस्तक प्रथम आचारांग है, द्वितीय सूत्रकृतांग मुख है, तृतीय स्थानांग कंठ—ग्रीवा है, चतुर्थ समवायांग और पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग ये दोनों अंग दोनों भुजाएं हैं, छठा ज्ञातृधर्मकथांग और सातवां उपासकाध्ययनांग ये दोनों स्तन्हैं, आठवाँ अंतकृत्दशांग नाभि है, नवमां अनुत्तरौपपादिक दशांग सुनितंब है, दशां प्रश्न व्याकरणांग सुजघन (जांघ) है, ग्यारहवां विपाकसूत्रांग और बारहवां दृष्टिवादांगोय्दोनों चरण हैं। इस प्रकार इन द्वादश अंगों से सरस्वती देवी के अंगों का निर्माण हुआ है।

इन सरस्वती देवी के सम्यग्दर्शन तिलक है, चौदह पूर्व आभूषण हैं और चौदह प्रकीर्णक सुंदर पत्रांकुर की शोभा हैं—शृंगार हैं, सर्वज्ञदेव के मुखकमल से विनिर्गत प्रवाहरूप से आती हुई द्रव्य-भावरूप श्रुतदेवी सभी देवताओं की अधिदेवता हैं। ये परमब्रह्मस्वरूप—मोक्षमार्ग में आदरणीय हैं और भुक्ति तथा मुक्ति को देने वाली हैं।

हे जिनवाणि! हे श्रुतदेवि! आप मोहरूपी अंधकार को जड़मूल से नष्ट करने में कुशल हो, सर्व जगत को उज्ज्वल करने वाली हो। पूर्वदिशा अल्पतेजस्वी सूर्य को जन्म देती है किन्तु आप चिन्मय तेज को उत्पन्न करने वाली हो अतः पूर्वदिशा को भी आप जीतने वाली हो। जो अनादिकाल से भव-भव में दुर्लभ है, ऐसा अनंत और अचिन्त्य मोक्षसुख भी आपके प्रसाद से पुरुषों को सुलभता से शीघ्र ही प्राप्त हो जाता है अतः हे अंब! आपको नमस्कार हो। जो मनुष्यों के चित्त में चमत्कार को उत्पन्न करने वाले हैं, ऐसे महोदय और समस्त अभ्युदय भी आपके प्रसाद से ही पुण्यशाली लोग हस्तगत कर लेते हैं, इसलिए हे लोक मातः! आपको नमस्कार हो।

हे अंब! सकलयुवतियों की सृष्टि में आप चूड़ामणि हो, सर्वगुणों की पुष्टि की और धर्मसृष्टि की आप ही मूल कारण हो, हे जिनवाणि! अपने लिए इष्ट ऐसी मुक्ति के लिए आप ही प्रधान कारण हो अतः आपके चरण कमलों को मैं अतीव भक्ति से नमस्कार करता हूँ।

(इस प्रकार सरस्सवी देवी की मूर्ति बनवाकर प्रतिष्ठा कराकर विराजमान करना चाहिए। इन्हें श्वेत वस्त्र पहनाना चाहिए जैसा कि सरस्वती स्तोत्र में-"श्री चन्द्रिका कलित निर्मलशुभ्रवस्त्रे!" ऐसा लिखा है। इनका पंचामृत अभिषेक, सरस्वती पूजन आदि करके महाशृंगार करना चाहिए। वस्त्र सहित इन सरस्वती को मुनि-आर्यिकाएं भी नमस्कार करते हैं जैसे कि वस्त्र से वेष्टित शास्त्रों को नमस्कार करते हैं। ये सरस्वती देवी चार प्रकार के देवपर्याय में से नहीं हैं, प्रत्युत् द्वादशांग श्रुतरूप कल्पना से निर्मित देवी रूप हैं, ऐसा समझना।)

सरस्वती स्तोत्र

चन्द्रार्क-कोटिघटितोज्ज्वल-दिव्य-मूर्ते!
श्रीचन्द्रिका-कलित-निर्मल-शुभ्रवस्त्रे!
कामार्थ-दायि-कलहंस-समाधिरूढे ।
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।1।।

देवा-सुरेन्द्र-नतमौलिमणि-प्ररोचि,
श्रीमंजरी-निविड-रंजित-पादपद्मे !
नीलालके ! प्रमदहस्ति-समानयाने!
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।2।।

केयूरहार - मणिकुण्डल - मुद्रिकाद्यैः,
सर्वाङ्गभूषण - नरेन्द्र - मुनीन्द्र-वंद्ये !
नानासुरत्न-वर-निर्मल-मौलियुक्ते !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि ! ।।3।।

मंजीरकोत्कनककंकणकिंकणीनां,
कांच्याश्च झंकृत-रवेण विराजमाने !
सद्धर्म-वारिनिधि-संतति-वर्द्धमाने !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। 4।।

कंकेलिपल्लव-विनिंदित-पाणियुग्मे !
पद्मासने दिवस-पद्मसमान-वक्त्रे !
जैनेन्द्र-वक्त्र-भवदिव्य-समस्त-भाषे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।। 5।।

अर्द्धेन्दुमण्डितजटाललितस्वरूपे !
शास्त्र-प्रकाशिनि-समस्त-कलाधिनाथे!
चिन्मुद्रिका-जपसराभय-पुस्तकांङ्के !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि!।।6।।

डिंडीरपिंड - हिमशंखसिता - भ्रहारे!
पूर्णेन्दु-बिम्बरुचि-शोभित-दिव्यगात्रे!

चांचल्यमान - मृगशावललाट - नेत्रे !
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि! ।।7।।

पूज्ये पवित्रकरणोन्नत-कामरूपे!
नित्यं फणीन्द्र-गरुडाधिप-किन्नरेन्द्रैः!
विद्याधरेन्द्र-सुरयक्ष-समस्त-वृन्दैः,
वागीश्वरि ! प्रतिदिनं मम रक्ष देवि !।।8।।

अनुष्टुप छंद – सरस्वत्याः प्रसादेन, काव्यं कुर्वन्ति मानवाः।
तस्मान्निश्चल-भावेन , पूजनीया सरस्वती।।9।।

श्री सर्वज्ञ मुखोत्पन्ना, भारती बहुभाषिणी।
अज्ञानतिमिरं हन्ति, विद्या-बहुविकासिनी।।10।।

सरस्वती मया दृष्टा, दिव्या कमललोचना।
हंसस्कन्ध-समारूढा, वीणा-पुस्तक-धारिणी।।11।।

प्रथमं भारती नाम, द्वितीयं च सरस्वती।
तृतीयं शारदादेवी, चतुर्थं हंसगामिनी।।12।।

पंचमं विदुषां माता, षष्ठं वागीश्वरी तथा।
कुमारी सप्तमं प्रोक्ता, अष्टमं ब्रह्मचारिणी।।13।।

नवमं च जगन्माता, दशमं ब्राह्मणी तथा।
एकादशं तु ब्रह्माणी, द्वादशं वरदा भवेत् ।।14।।

वाणी त्रयोदशं नाम, भाषा चैव चतुर्दशं।
पंचदशं श्रुतदेवी च , षोडशं गौर्निगद्यते।।15।।

एतानि श्रुतनामानि, प्रातरुत्थाय यः पठेत्।
तस्य संतुष्यति माता, शारदा वरदा भवेत् ।। 16।।

सरस्वति ! नमस्तुभ्यं, वरदे ! कामरूपिणि!
विद्यारंभं करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा।।17।।

।। इति श्री सरस्वती नाम स्तोत्रम् ।।

सरस्वती देवी के 108 मंत्र

अर्हद्वक्त्राब्जसंभूतां, गणाधीशावतारितां।
महर्षिधारितां स्तोष्ये, नाम्नामष्टशतेन गां[1]।।1।।

1. ॐ ह्रीं श्री आदिब्रह्ममुखाम्भोजप्रभवायै नमः 2. ॐ ह्रीं द्वादशांगिन्यै नमः 3. ॐ ह्रीं सर्वभाषायै नमः 4. ॐ ह्रीं वाण्यै नमः 5. ॐ ह्रीं शारदायै नमः 6. ॐ ह्रीं गिरे नमः 7. ॐ ह्रीं सरस्वत्यै नमः 8. ॐ ह्रीं ब्राह्म्यै नमः 9. ॐ ह्रीं वाग्देवतायै नमः 10. ॐ ह्रीं देव्यै नमः 11. ॐ ह्रीं भारत्यै नमः 12. ॐ ह्रीं श्रीनिवासिन्यै नमः 13. ॐ ह्रीं आचारसूत्रकृत पादायै नमः 14. ॐ ह्रीं स्थानसमवायांगजंघायै नमः 15. ॐ ह्रीं व्याख्या-प्रज्ञप्ति-ज्ञातृ-धर्मकथांग चारूरूभासुरायै नमः 16. ॐ ह्रीं उपासकांग-सन्मध्यायै नमः 17. ॐ ह्रीं अंतकृद्दशांगनाभिकायै नमः 18. ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपत्तिदशप्रश्न-व्याकरणस्तन्यै नमः 19. ॐ ह्रीं विपाकसूत्रसद्वक्षसे नमः 20. ॐ ह्रीं दृष्टिवादांगकंधरायै नमः 21. ॐ ह्रीं परिकर्ममहासूत्र-विपुलांसविराजितायै नमः 22. ॐ ह्रीं चन्द्रमार्तंडप्रज्ञप्तिभास्वद्बाहुसु-बल्ल्यै नमः 23. ॐ ह्रीं जम्बूद्वीप सागरप्रज्ञप्तिसत्करायै नमः 24. ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्तिविभ्राजत्पंच-शाखामनोहरायै नमः 25. ॐ ह्रीं पूर्वानुयोग-वदनायै नमः 26. ॐ ह्रीं पूर्वाख्यचिबुकांचितायै नमः 27. ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वसन्नासायै नमः 28. ॐ ह्रीं अग्रायणीयदंतायै नमः 29. ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिप्रवादोष्ठायै नमः 30. ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादकपोलायै नमः 31. ॐ ह्रीं सत्यप्रवादरसनायै नमः 32. ॐ ह्रीं आत्मप्रवादमहाहनवे नमः 33. ॐ ह्रीं कर्मप्रवादसत्तालवे नमः 34. ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानललाटायै नमः 35. ॐ ह्रीं विद्यानुवादकल्याणनामधेयसुलोचनायै नमः 36. ॐ ह्रीं प्राणावायक्रियाविशाल-पूर्वभ्रूधनुर्लतायै नमः 37. ॐ ह्रीं लोकबिन्दुमहासारचूलिकाश्रवणद्वयायै नमः 38. ॐ ह्रीं स्थलगाख्यलसच्छीर्षायै नमः 39. ॐ ह्रीं जलगाख्यमहाकचायै नमः 40. ॐ ह्रीं मायागतसुलावण्यायै नमः 41. ॐ ह्रीं रूपगाख्यसुरूपिण्यै नमः 42. ॐ ह्रीं आकाशगतसौंदर्यायै नमः 43. ॐ ह्रीं श्रीकलापिसुवाहनायै नमः 44. ॐ ह्रीं निश्चयव्यवहारदृङ्नूपुरायै नमः 45. ॐ ह्रीं बोधमेखलायै नमः 46. ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रशीलहारायै नमः 47. ॐ ह्रीं महोज्ज्वलायै नमः 48. ॐ ह्रीं नैगमामोघकेयूरायै नमः 49. ॐ ह्रीं संग्रहानघचोलकायै नमः 50. ॐ ह्रीं व्यवहारोद्घटकायै

1. सरस्वती के 108 मंत्रों को प्रतिदिन पढ़ने से श्रुतज्ञान की वृद्धि होती है।
2. क्रमशः सर्वशास्त्रों का एवं सर्व भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर श्रुतकेवली के पद को सहज ही प्राप्त किया जा सकता है।

नमः 51. ॐ ह्रीं ऋजुसूत्रसुकंकणायै नमः 52. ॐ ह्रीं शब्दोज्ज्वलमहापाशायै नमः 53. ॐ ह्रीं समभिरूढमहांकुशायै नमः 54. ॐ ह्रीं एवंभूतसन्मुद्रायै नमः 55. ॐ ह्रीं दशधर्ममहाम्बरायै नमः 56. ॐ ह्रीं जपमाला-लसद्हस्तायै नमः 57. ॐ ह्रीं पुस्तकांकितसत्करायै नमः 58. ॐ ह्रीं नयप्रमाणताटंकायै नमः 59. ॐ ह्रीं प्रमाणद्वयकर्णिकायै नमः 60. ॐ ह्रीं केवलज्ञानमुकुटायै नमः 61. ॐ ह्रीं शुक्लध्यानविशेषकायै नमः 62. ॐ ह्रीं स्यात्कारप्राणजीवन्त्यै नमः 63. ॐ ह्रीं चिदुपादेयभाषिण्यै नमः 64. ॐ ह्रीं अनेकांतात्मकानंदपद्मासन-निवासिन्यै नमः 65. ॐ ह्रीं सप्तभंगीसितच्छत्रायै नमः 66. ॐ ह्रीं नयषट्कप्रदीपिकायै नमः 67. ॐ ह्रीं द्रव्यार्थिकनयानूनपर्यायार्थिकचामरायै नमः 68. ॐ ह्रीं कैवल्यकामिन्यै नमः 69. ॐ ह्रीं ज्योतिर्मय्यै नमः 70. ॐ ह्रीं वाङ्मयरूपिण्यै नमः 71. ॐ ह्रीं पूर्वापराविरुद्धायै नमः 72. ॐ ह्रीं गवे नमः 73. ॐ ह्रीं श्रुत्यै नमः 74. ॐ ह्रीं देवाधिदेवतायै नमः 75. ॐ ह्रीं त्रिलोकमंगलायै नमः 76. ॐ ह्रीं भव्यशरण्यायै नमः 77. ॐ ह्रीं सर्ववंदितायै नमः 78. ॐ ह्रीं बोधमूर्तये नमः 79. ॐ ह्रीं शब्दमूर्तये नमः 80. ॐ ह्रीं चिदानन्दैकरूपिण्यै नमः 81. ॐ ह्रीं शारदायै नमः 82. ॐ ह्रीं वरदायै नमः 83. ॐ ह्रीं नित्यायै नमः 84. ॐ ह्रीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदायै नमः 85. ॐ ह्रीं वागीश्वर्यै नमः 86. ॐ ह्रीं विश्वरूपायै नमः 87. ॐ ह्रीं शब्दब्रह्म-स्वरूपिण्यै नमः 88. ॐ ह्रीं शुभंकर्यै नमः 89. ॐ ह्रीं हितंकर्यै नमः 90. ॐ ह्रीं श्रीकर्यै नमः 91. ॐ ह्रीं शंकर्यै नमः 92. ॐ ह्रीं सत्यै नमः 93. ॐ ह्रीं सर्वपापक्षयंकर्यै नमः 94. ॐ ह्रीं शिवंकर्यै नमः 95. ॐ ह्रीं महेश्वर्यै नमः 96. ॐ ह्रीं विद्यायै नमः 97. ॐ ह्रीं दिव्यध्वन्ये नमः 98. ॐ ह्रीं मात्रे नमः 99. ॐ ह्रीं विद्वदाल्हाददायिन्यै नमः 100. ॐ ह्रीं कलायै नमः 101. ॐ ह्रीं भगवत्यै नमः 102. ॐ ह्रीं दीप्तायै नमः 103. ॐ ह्रीं सर्वशोकप्रणाशिन्यै नमः 104. ॐ ह्रीं महर्षिधारिण्यै नमः 105. ॐ ह्रीं पूतायै नमः 106. ॐ ह्रीं गणाधीशावतारितायै नमः 107. ॐ ह्रीं ब्रह्मलोकस्थिरावासायै नमः 108. ॐ ह्रीं द्वादशाम्नाय देवतायै नमः।

इदमष्टोत्तरशतं, भारत्याः प्रतिवासरं।
यः प्रकीर्तयते भक्त्या, स वै वेदांतगो भवेत्।।1।।

कवित्वं गमकत्वं च, वादितां वाग्मितामपि।
समाप्नुयादिदं स्तोत्र-मधीयानो निरंतरं।।2।।

आयुष्यं च यशस्यं च, स्तोत्रमेतदनुस्मरन्।
श्रुतकेवलितां लब्ध्वा, सूरिर्ब्रह्मा भजेत्परं।।3।।

।।इति।।

जिनवाणी स्तुति

रचयित्री—आर्यिका चंदनामती

हे सरस्वती माता, अज्ञान दूर कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।

श्रुत का भण्डार भरा, तेरे ज्ञान की गंगा में।
जन मन श्रृंगार करा, गुरुवर मुनि चन्दा ने।।
श्रृंगार सहित माता, श्रुत ज्ञान पूर्ण कर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।1।।

प्रभुवीर की वाणी सुन, गणधर ने संवारा है।
मुनिगण उस पथ पर चल, निज ज्ञान सुधारा है।।
निज ज्ञान किरण दाता, आलोक ज्ञान भर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।2।।

चंदन चंदा गंगा, तन शीतल कर सकते।
मुक्ता मालाएं भी, नहिं मन को हर सकते।।
''चन्दना'' सभी जग को, शारद मां का वर दो।
जग को देकर साता, विज्ञान पूर भर दो।।3।।

सरस्वती-चालीसा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–दोहा –

तीर्थंकर मुख से खिरी, नमूँ दिव्यध्वनि सार।
द्वादशांगमय सरस्वती, को वन्दन शत बार।।1।।

बुद्धि प्रखरता के लिए, करूँ मात गुणगान।
जड़ता मेरी दूर हो, पाऊँ ऐसा ज्ञान।।2।।

चालीसा माध्यम बने, गुण वर्णन में सार्थ।
हों प्रसन्न माँ सरस्वती, मुझ मन में साकार ।।3।।

–चौपाई –

जय माँ सरस्वती जिनवाणी, जय वागीश्वरि जय कल्याणी।।1।।
शारद मात तुम्हारी जय हो, तुम जिनवर मन में अक्षय हो।।2।।
द्वादशांगमय रूप तुम्हारा, ज्ञानीजन को लगता प्यारा।।3।।
वह आध्यात्मिक ज्ञान अपूरब, ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब।।4।।
आचारांग प्रथम कहलाता, सूत्रकृतांग द्वितीय सुहाता।।5।।
तीजा स्थानांग कहा है, समवायांग चतुर्थ रहा है।।6।।
व्याख्याप्रज्ञप्ती है पंचम, ज्ञातृकथा शुभ अंग है षष्ठम् ।।7।।
उपासकाध्ययनांग है सप्तम, अन्तःकृद्दश अंग जु अष्टम् ।।8।।
नवम अनुत्तरदशांग आता, दशम प्रश्नव्याकरण कहाता।।9।।
सूत्रविपाक नाम ग्यारहवाँ, दृष्टीवाद कहा बारहवाँ।।10।।
दृष्टिवाद के पाँच भेद हैं, जिन्हें बताते जैन वेद हैं।।11।।
पहला है परिकर्म सुहाना, सूत्र पूर्वगत क्रमशः माना।।12।।
है प्रथमानुयोग फिर चौथा, पंचम भेद चूलिका होता।।13।।

चौदह भेद पूर्वगत के हैं, आगम में सार्थक वर्णे हैं।।14।।
प्रथम कहा उत्पादपूर्व है, दूजा अग्रायणी पूर्व है।।15।।
वीर्यप्रवाद पूर्व है तीजा, अस्तीनास्ति प्रवाद है चौथा।।16।।
ज्ञानप्रवाद पूर्व है पंचम, सत्यप्रवाद पूर्व है षष्ठम् ।।17।।
सप्तम पूर्व है आत्मप्रवादम्, कर्मप्रवाद पूर्व है अष्टम् ।।18।।
नवमा प्रत्याख्यान पूर्व है, पुनि विद्यानुप्रवाद पूर्व है।।19।।
पूर्व कहा कल्याणवाद है, प्राणावाय पूर्व द्वादश है।।20।।
क्रियाविशाल पूर्व तेरहवाँ, लोकबिन्दुसारम् चौदहवाँ।।21।।
ग्यारह अंग चतुर्दश पूरब, इनसे युत जिनवचन अपूरब।।22।।
वीरप्रभू की दिव्यध्वनि है, गौतम गणधर की कथनी से।।23।।
यह श्रुत प्रगट हुआ धरती पर, आचार्यों की बना धरोहर ।।24।।
परम्पराचार्यों ने पाया, भव्यों को उपदेश सुनाया।।25।।
वर्तमान के इस कलियुग में, अंगपूर्व उपलब्ध न जग में।।26।।
उनके अंशरूप हैं आगम, वर्तमान के श्रुत परमागम।।27।।
षट्खण्डागम आदि ग्रंथ हैं, धवलादिक टीका से युत हैं।।28।।
उस पर नूतन संस्कृत टीका , गणिनी ज्ञानमती जी ने लिखा।।29।।
वर्तमान में चतुरनुयोगा, उसमें ही श्रुत गर्भित होगा।।30।।
जो भी सब उपलब्ध शास्त्र हैं, उनसे कर लो सिद्ध स्वार्थ है।।31।।
सरस्वती माँ का आराधन, करता है पापों का क्षालन।।32।।
जिनवाणी के कई नाम हैं, सरस्वती भारती धाम है।।33।।
शारद माँ तुम हंसवाहिनी, विदुषी वागीश्वरी ब्राह्मणी।।34।।
ब्रह्मचारिणी और कुमारी, कहें जगन्माता सुखकारी।।35।।
श्रुतदेवी भाषा गौ वाणी, विदुषी सर्वमता प्रभु वाणी।36।।
इन सोलह नामों युत माता, मेरे मन की हरो असाता।।37।।
अनेकान्तमय अमृत झरिणी, श्रुतज्ञान की तुम निर्झरिणी।।38।।

तुममें हो अवगाहन मेरा, हो जावे बस ज्ञान उजेरा।।39।।
यही एक अभिलाषा मेरी, मिटे ज्ञान से भव की फेरी।।40।।

–शंभु छंद–

यह श्रुत चालीसा जो भविजन, प्रतिदिन श्रद्धा से पढ़ लेंगे।
लौकिक आध्यात्मिक ज्ञान सभी, वे अपने मन में भर लेंगे।।
पच्चिस सौ चौबिस वीर संवत् की, श्रुत पंचमी तिथी आई।
''चन्दनामती'' निज भावों में, श्रुतभक्ती गंगा भर लाई।।1।।

यह ज्ञानगंग बन करके मेरे, मन को पावन कर देवे।
जग को अपनी पावनता की, सौरभता का परिचय देवे।।
निज पर की जड़ता क्षय करने का, भाव मात्र इस रचना में।
जिनदेव शास्त्र गुरु की छाया, मेरे जीवन में सदा मिले।।2।।

–दोहा–

सरस्वती माँ के चरण, में अर्पित यह पुष्प।
चालीसा के निमित्त से, करूँ भाव निज शुद्ध।।3।।

सरस्वती माता की स्तुति

(श्रृंगार करते समय यह स्तुति पढ़ें)

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–शेर छन्द –

कमलासिनी श्रुतधारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।

है द्वादशांग रूप से निर्मित तेरी काया।
सम्यक्त्व तिलक माथे पे चारित्र की छाया।।

विद्वानों से भी पूज्य तुम माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।1।।

जिनवर की मूर्ति तेरे मस्तक पे राजती।
वन्दन करें जो उनकी ज्ञान शक्ति जागती।।

हे श्वेतवस्त्र धारिणी माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।2।।

हे शारदा तू ज्ञान की गंगा बहाती है।
वागीश्वरी तू ब्रह्मचारिणी कहाती है।।

कर में है वीणा पुस्तक माला सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।3।।

जो भी तेरी आराधना में लीन होता है।
मिथ्यात्वतिमिर हटा ज्ञान लीन होता है।।

है ''चन्दना'' तुम पद में नत माता सरस्वती।
जिनशासनी अनुगामिनी माता सरस्वती।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज-जिस गली में............

चल पड़े जिस तरफ दो कदम मात के,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।
पड़ गई दृष्टि जिस तीर्थ पर मात की,
कोटि दृष्टी में वे छा गए देश की।।टेक.।।

मुक्तिपथ पर चली जब वो कच्ची कली,
फूल बन बालसतियों की बगिया खिली।
फूल बन.......
क्वांरी कन्याओं के खुल गए रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।1।।

लेखनी ने लिखे सैकड़ों ग्रंथ जब,
अन्य माताओं ने भी लिखे ग्रंथ तब।।
अन्य माताओं........
ज्ञानज्योति के अब खुल गए रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े।।2।।

तीर्थ उद्धार की प्रेरिका बन गईं,
मंत्र 'अर्हम्' की ये देशना बन गईं।
मंत्र अर्हम्..........
दे गईं नव कृती रास्ते रास्ते, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।3।।

पार्श्वप्रभु के महोत्सव की दी प्रेरणा,
जन्मभूमि बनारस में उत्सव मना।।
जन्मभूमि........
ऐसे उत्सव चलें सब शहर ग्राम में, कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े।।4।।

''चन्दनामति'' ये चैतन्य तीरथ बनीं,
जैन संस्कृति की सचमुच ये कीरत बनीं।
जैन...........
भक्त इनके सदा भक्ति में नाचते,
कोटि पग चल पड़े उस तरफ देश के।।
चल पड़े.।।5।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

आ जा रि चांदनी, हमारो पूनो चांद लेके आ जा-2।
हम सब आश लगाए-आ जा, तेरे दर्शन पाएं-आ जा।।
जीवन सफल बनाएं-आ जा।
आ जा........।।टेक.।।

धरती पर इक चांद जो आया, नभ का चांद स्वयं शरमाया।
ज्ञानमती बन ज्ञान लुटाया, जग को जीवन सार बताया।।
आ जा रि चांदनी........।।1।।

अवध की धरती मांग रही थी, अपने चांद को चाह रही थी।
पाकर मानो सब कुछ पाया, ज्ञानमती माता की छाया।।
आ जा रि चांदनी.......।।2।।

तुम सी अद्भुत कन्या पाकर, धन्य टिकैतनगर रत्नाकर।
ऐसे तुमने किये हैं काम, हुआ ग्राम का जग में नाम।।
आ जा रि चांदनी.......।।3।।

तुमने कई इतिहास रचे हैं, तेरे गुणों के बाग सजे हैं।
ग्रंथों का भण्डार भरा, तुझमें श्रुत का सार भरा।।
आ जा रि चांदनी.......।।4।।

श्वेत वसन में तेरी सूरत, लगती जिनवाणी सम मूरत।।
सबको दें ऐसा वरदान, लहे ''चन्दना'' तुम सम ज्ञान।
आ जा रि चांदनी.......।।5।।

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों! अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री ऋषभदेव भगवान
	–श्री अजितनाथ भगवान
	–श्री अभिनंदननाथ भगवान
	–श्री सुमतिनाथ भगवान
	–श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	–श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	–श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	–श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	–श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	–श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	–श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी	–श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	–श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	–श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	–श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	–श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	–श्री शांतिनाथ भगवान
	–श्री कुन्थुनाथ भगवान
	–श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	–श्री मल्लिनाथ भगवान
	–श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	–श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	–श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	–श्री महावीर भगवान

–निवेदक–

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

प्रधान कार्यालय –**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**, फोन नं.-01233-280184, 292943